# केन्द्रीय विद्यालय

# सी. टी. पी. पी. छबड़ा

# उड़ान

नयी उम्मीदों की

मोतीपुरा चौकी, तहसील-छबड़ा, जिला बारां (राज.)

दूरभाष: 07452-225025, e-mail : kvctpp.chhabra@gmail.com

# KENDRIYA VIDYALAYA CTPP CHHABRA

## EDITORIAL BOARD

*Chief Patron*

**Sh. Yashpal Singh**

Deputy Commissioner, KVS(RO), Jaipur

**Patron**

**Sh. D. R. Meena**

**Asst. Commissioner KVS(RO), Jaipur**

**Vice Patron**

**Sh. M. K. Meena**

**Principal**

**Editor in Chief**

Sh. Om Prakash, PGT(CS)

# सन्देश

**प्रिय मुकेश जी ,**

यह हर्ष का विषय है कि केन्द्रीय विद्यालय सीटीपीपी छबड़ा द्वारा छात्रों और शिक्षकों की साहित्यिक प्रतिभा को मुखरित करते हुए विद्यालय पत्रिका 2018-19 का प्रकाशन किया जा रहा है |

नव निहाल बच्चों की लेखनी से निकली नवीन रचनाएं अपने-अपने शब्दों से आलोकित होकर विद्यालय के गुलशन को और अधिक महकाती हैं | विभिन्न विचारों की अभिव्यक्ति को एकसाथ एक मंच देने का एक सशक्त माध्यम है - विद्यालय पत्रिका |

पत्रिका के माध्यम से विद्यालय में वर्ष भर आयोजित गतिविधियों की झांकी प्रस्तुत करने का भी अवसर मिलता है | विगत वर्षों में केन्द्रीय विद्यालय सीटीपीपी छबड़ा की सभी क्षेत्रों में उल्लेखनीय भागीदारी रही है | यह विद्यालय अपनी एक विशिष्ट पहचान रखता है | इस हेतु प्राचार्य एवं सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं |

सभी रचनाकारों ओर सहयोगी अध्यापकों को इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए मेरी ओर से बहुत शुभकामनाएं |

आपका शुभेच्छु,
(यशपाल सिंह)

श्री मुकेश कुमार मीना
प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय
सीटीपीपी

**अध्यक्ष की कलाम से ----**

शिक्षा का अर्थ छात्रों एवं छात्राओं के संम्पूर्ण विकास में निहित है | सृजनशीलता शिक्षा का एक अहम् आयाम है | छात्रों एवं छात्राओं में सृजनशीलता का उन्मेष व विकास के लिए साहित्य एक अत्यंत प्रभावशाली माध्यम है | यह अत्यंत गौरव एवं अस्मिता का विषय है कि केन्द्रीय विद्यालय, सीटीपीपी, मोतीपुरा चौकी, छबड़ा वर्ष 2018-19 की विद्यालय पत्रिका 'उड़ान' का प्रकाशन करने जा रहा है |

"उड़ान" साहित्य के बहुविध विभागों में यथा लेखों, कविताओं, कहानियों, रोचक प्रसंगों, हास्य विनोद लेखों इत्यादि के जरिये छात्र एवं छात्राओं की सृजनशीलता एवं प्रतिभा के विकास में मील का पत्थर साबित हो, ऐसी मैं कामना करता हूँ |

अंतर-अभिव्यक्ति का परिप्रकाश किसी भी व्यक्ति के मानसिक व सृजनशील व्यक्तित्व का परिमापक है | अत: पाठ्यक्रम के साथ साथ अतिरिक्त पाठ्यसहगामी गतिविधियों के लिए छात्र एवं छात्राओं को प्रेरित करना सभी शिक्षकों एवं विद्यालय का नैतिक दायित्व होता है |

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि केन्द्रीय विद्यालय सीटीपीपी, मोतीपुरा चौकी, छबड़ा अपने उत्कृष्ट सेवा प्रबन्धन का परिचय देते हुए छात्र एवं छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु प्रयत्नशील है |

इस सन्दर्भ में केन्द्रीय विद्यालय, मोतीपुरा चौकी, छबड़ा के प्राचार्य महोदय, सभी शिक्षकगण, कर्मचारीगण एवं छात्र- छात्राओं को अभिवादन करते हुए विद्यालय पत्रिका "उड़ान" की सफलता व उत्तरोतर उन्नति के लिए शुभकामनाएं देता हूँ |

प्रमोद कुमार
मुख्य अभियंता
छबड़ा तापीय विद्युत गृह, छबड़ा

प्राचार्य की कलम से .....

**औरों को हँसते देखो मनु, हंसो ओर सुख पाओ|**

**अपने सुख को विस्तृत कर लो सबको सुखी बनाओ ||** -- कामायनी (जयशंकर प्रसाद)

साहित्य - सृजन का मूल उत्स लोक कल्याण और परमार्थ है |इसी भाव से प्रेरित होकर साहित्यकार कल्पना लोक में अवगाहन करते हुए अपनी सोच के ऐसे मोती निकालता है जो न केवल लोक रंजन करते, अपितु समाज को भी नयी दिशा और दशा प्रदान करते हैं | वस्तुतः अनुभूतियों की निश्छल अभिव्यक्ति ही साहित्य- सृजन की वह मूल प्रेरणा है जो एक साहित्यकार को कलम उठाने के लिए विवश कर देती है | आज के भौतिकतावादी युग में व्यक्ति ईर्ष्या, द्वेष एवम पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर जीवन जीने की नैसर्गिक कला को भूल बैठा है और उसका अहं और झूठी शान-औ शौक़त को ही वास्तविक जीवन समझ बैठा है , जिसके कारण मनुष्य की तीनों ही वृत्तियों (ज्ञान वृति , भाव वृति , कर्म वृति ) में परस्पर समन्वय नहीं रहा और यही दुःख का कारण है | इसीलिए हृदयरूपी विश्वासमयी रागात्मक वृति, सुसंकल्पयुक्त मेधा और मननशील मन से ही व्यक्ति और समाज का सामंजस्य और सामरस्य ही समाज में आनंदवाद की प्रतिष्ठा कर सकता है, जो कि आज की महती आवश्यकता है |

**ज्ञान दूर कुछ क्रिया बिन, इच्छा क्यों पूरी हो मन की | एक दूसरे से मिल न सके यही विडम्बना है जीवन की ||**

अर्थात जिस प्रकार साहित्य समाज का दर्पण होता है, वैसे ही विद्यालय पत्रिका भी विद्यालयी गतिविधियों का आईना होती है | जिसमें नवसृजनधर्मा विद्यार्थी अपनी कल्पनाओं के रंगों और जज्बातों को कागज पर एक सुन्दर चित्र के रूप में उकेरता है , इसी मूल भाव से प्रेरित होकर विद्यालय पत्रिका “उड़ान” प्रकाशित की जा रही है ताकि छात्रों का सर्वांगीण विकास हो सके | मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका छात्रों की रचनात्मकता, सृजनात्मकता और अपनी अनुभूतियों को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त मंच साबित होगी |

“उड़ान” पत्रिका के प्रकाशन में अपना अमूल्य सहयोग एवम मार्गदर्शन देने के लिए मैं आदरणीय श्री यशपाल सिंह, उपायुक्त , केन्द्रीय विद्यालय संगठन, जयपुर संभाग का तथा श्री पी.के. अग्रवाल , अध्यक्ष विद्यालय प्रबन्धन समिति व मुख्य अभियंता, सी टी पी पी छबड़ा का हृदय की अनन्त गहराइयों से आभार व्यक्त करता हूँ | साथ ही विद्यालय के सभी छात्र-छात्राओं तथा सभी शिक्षकों को भी हृदय की अतल गहराइयों से उनके अथक परिश्रम हेतु शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ |

(मुकेश कुमार मीना )

प्राचार्य

# VMC MEMBERS OF THE VIDYALAYA-2018-19

| क्र. स. | सदस्य का नाम | Name | Designation |
|---|---|---|---|
| 1 | श्री पी. के. अग्रवाल | Sh. P.K. Agrawal | CE CTPP & Chairman VMC |
| 2 | श्री एस. एस. मीना | Sh. S. S. Meena | ACE& Chairman Nominee |
| 3 | श्री विवेक शुक्ला | Sh. Vivek Shukla | CAO CTPP & VMC member |
| 4 | श्री एल. एन. वर्मा | Sh. L. N. Verma | SE ,CTPP & VMC Members |
| 5 | श्रीमती कमलेश मीना | Smt. Kamlesh Meena | Principal, GSSS, Titerkhedi |
| 6 | श्री हजारी लाल मीना | Sh. HajariLal Meena | Principal, GSSS, Bhulon |
| 7 | श्री एस. के. जैन | Sh. S. K. Jain | SE P&A CTPP |
| 8 | डॉ. जूही सिंह | Dr. Juhi Singh | MO,CTPP Dispensary |
| 9 | श्री घनश्याम मीना | Sh. Ghanshyam Meena | XEN CTPP, Parent Member |
| 10 | श्री जसवंत सिंह राठौड़ | Sh. Jaswant Singh Rathore | Parent Member |
| 11 | श्री बजीर सिंह | Sh. Bazir Singh | SM, Rly Stn Motipura |
| 12 | श्री यू. एल. मीना | Sh. U. L. Meena | SM, Rly Stn Motipura |
| 13 | श्री एम. के. मीना | Sh. M. K. Meena | Principal, Secretary, KV CTPP |
| 14 | श्री सन्देश खत्री | Sh. Sandesh. Khatri | Teacher Members, KV CTPP |
| 15 | श्रीमती पूजा | Sh. Pooja | Postmaster, PO Chhabra, CGEWS, |

# सहकर्मी सूची

| क्र. स. | कर्मचारी का नाम | Name in English | Designation / पद |
|---|---|---|---|
| 1 | श्री मुकेश कुमार मीना | Mr. Mukesh Kumar Meena | प्राचार्य |
| 2 | श्री विजय कुमार सोरल | Mr. Vijay Kumar Soral | पीजीटी (गणित) |
| 3 | श्री ओम प्रकाश | Mr. Om Prakash | पीजीटी (कंप्यूटर विज्ञान) |
| 4 | श्री राम लाल मीना | Mr. Ram Lal Meena | पीजीटी (भौतिकी) |
| 5 | श्री सुरेश कुमार | Mr. Suresh Kumar | पीजीटी (रसायन विज्ञान) |
| 6 | श्री मुनेश मीना | Mr. Munesh Kumar | पीजीटी (हिन्दी) |
| 7 | श्री प्रेम दीपक मिश्र | Mr. Prem Deepak Misra | पीजीटी (जीव विज्ञान) |
| 8 | श्रीमती नर्मदा जाखड़ | Mrs. Narmada Jakhar | पीजीटी (अंग्रेजी) |
| 9 | श्री बनवारी लाल मीना | Mr. Banwari Lal Meena | टीजीटी (सा. विज्ञान) |
| 10 | श्री डी. पी. दिनेश | Mr. D. P. Dinesh | टीजीटी (अंग्रेजी) |
| 11 | श्री विनोद कुमार मालवीय | Mr. Vinod Malviya | टीजीटी (गणित) |
| 12 | श्री सन्देश खत्री | Mr. Sandsh Khatri | टीजीटी (कार्यानुभव) |
| 13 | श्री चन्द्र प्रकाश मीना | Mr. Chandra Prakash Meena | टीजीटी (शारीरिक स्वा. एवं शिक्षा) |
| 14 | श्री राजेश कुमार | Mr. Rajesh Kumar | टीजीटी (कला) |
| 15 | सुश्री यास्मीन जमील | Ms. Yasmeen Jamil | पुस्तकालयाध्यक्ष |
| 16 | श्री एम. एल. गन्धर्व | Mr. M. L. Gandharv | प्राथमिक शिक्षक (संगीत) |
| 17 | श्री मुकेश कुमार मीना | Mr. Mukesh Kumar Meena | प्राथमिक शिक्षक |
| 18 | सुश्री अंशु कुमारी | Ms. Anshu Kumari | प्राथमिक शिक्षिका |
| 19 | श्रीमती निधि | Mrs. Nidhi | प्राथमिक शिक्षिका |
| 20 | श्री सौरभ गुप्ता | Mr. Saurabh Gupta | प्राथमिक शिक्षक |
| 21 | श्री रवि कुमार वर्मा | Mr. Ravi Kumar Verma | प्राथमिक शिक्षक |
| 22 | श्री आलोक मिश्रा | Mr. Alok Mishra | वरिष्ठ सचिव सहायक |
| 23 | श्री सुरेन्द्र कुमार मालव | Mr. Surendra Malav | प्राथमिक शिक्षक-सविंदा |

## सबको प्यारे किसान हमारे !

सुबह हुई जब, जागे सब,
दरवाजे खुले, तब काम करे सब,
फिर किसान निकले खेत पर,
तब वो काम करे खूब |
कुछ दिनों बाद आया आषाढ़ का महीना,
तब हुई रिमझिम रिमझिम बारिश,
बिजली चमकने लगी, पेड़ नाचने लगे झूम झूम कर ।
पक्षी चहचहाने लगे, मोर नाचने लगे छम छम,
कोयल निकालती अपनी प्यारी आवाज,
तब वो लगे सबको प्यारी, बच्चे खेल और नाच रहे हैं |
तब किसानों को हुई मन ही मन खुशी,
तब किसान जोतने लगे, बीज बोने लगे, तब बच्चे देखने लगे ।
फिर खेत हुए हरे-हरे, तब सबके मन लगे भरे-भरे ।।
किसान जाने लगे खेत पर, जब देखा उन्होंने तितलियां उड़ने लगी ।
फिर फूल खिलने लगे, शाम हुई किसान लौटे घर पर |
इसी तरह किसान का चलता रोज का धंधा,
इसलिए वो रहते हमेशा खुश, न कोई चिंता न कोई गम,
बस हमेशा रहते अपने काम में मगन, सबको प्यारे किसान हमारे |
सबसे न्यारे किसान हमारे, सबको अनाज दान करने वाले किसान हमारे ।
सबसे प्यारे किसान हमारे ।।

नाम- पिंकी मेहता
कक्षा- दसवीं

## आओ फिर से दिया जलाएं(संकलित)

(रचयिता: स्व. अटल बिहारी वाजपयी )

भरी दुपहरी में अंधियारा ,
सूरज परछाई से हारा ,
अंतरतम का नेह निचोड़े ,
बुझी हुई बाती सुलगाएँ |
आओ फिर से दिया जलाएँ ||
हम पड़ाव को समझे मंज़िल ,
लक्ष्य हुआ आँखों से ओझल ,
वर्तमान के मोह जाल में ,
आने वाला कल न भुलाएँ |
आओ फिर से दिया जलाएँ ||
आहुति बाकी, यज्ञ अधूरा ,
अपनों के विघ्नों ने घेरा ,
अंतिम जय का वज्र बनाने ,
नव दधीचि हड्डियां गलाएँ |
आओ फिर से दिया जलाएँ ||

संकलनकर्ता:
नाम- हेमंत सिंह यादव
कक्षा- दसवीं

## जब हार गया शिकारी कुत्ता

एक बार की बात है | एक खरगोश घनी घनी झाड़ियों में छिपा आराम कर रहा था, पर अचानक एक जंगली कुत्ते की उस पर निगाह पड़ गई | उसने जोर से छलांग लगाई और उस झाड़ी के पास जा पहुंचा | अब तो खरगोश के लिए अपनी जान बचा पाना मुश्किल हो गया | वह झाड़ी से निकला और जितनी तेजी से भाग सकता था भागने लगा | लेकिन जंगली कुत्ता भी कुछ कम नहीं था उसने खरगोश को पकड़ने में कोई कसर नहीं रखी | तेजी से भागते हुए वह खरगोश का पीछा कर रहा था और उसे हर हाल में पकड़ लेना चाहता था, लेकिन खरगोश अपनी जान बचाने के लिए इतनी तेजी से भागा की जंगली कुत्ता आखिरकार उसे पकड़ने में नाकाम रहा | खरगोश एक झाड़ी में छिपकर गायब हो गया और जंगली कुत्ता मुंह लटकाए वापस अपने घर की ओर चल दिया | तभी रास्ते में उसे एक गडरिया दिखाई दिया | गडरिये ने जंगली कुत्ते को निराश देख कर थोड़ा मुस्कुराते हुए कहा भाई तुम तो इतना तेज दौड़ते हो फिर भी तुम छोटे से खरगोश को नहीं पकड़ पाए | तुम से तो वह बहुत छोटा है | इस पर जंगली कुत्ते ने कहा हाँ भाई बात तो तुम ठीक कह रहे हो कि उस छोटे से खरगोश को मैं नहीं पकड़ पाया, लेकिन तुम यह क्यों भूलते हो कि हम दोनों में एक बड़ा फर्क था | मैं तो सिर्फ अपने खाने के लिए दौड़ लगा रहा था, जबकि खरगोश अपनी जान बचाने के लिए दौड़ लगा रहा था | यही वजह है कि मुझे हार माननी पड़ी | सुनकर गडरिये को लगा कि वाकई शिकारी कुत्ते की बात में बड़ी सच्चाई है |

शिक्षा -जान सबको प्यारी होती है इसलिए जान बचाने के लिए कोई भी जीव अपनी सारी ताकत लगा देगा |

नाम- हर्ष शर्मा
कक्षा- सातवीं

## गांधी (संकलित कविता)

सच्चाई का लेकर शस्त्र ,
और अहिंसा का ले अस्त्र |
तूने अपना देश बचाया ,
गोरों को था दूर भगाया ||
दुश्मन से भी प्यार किया ,
मानव पर उपकार किया |
गांधी करते हैं तुझे नमन ,
तुझे चढ़ाते प्रेम सुमन ||

नाम- नेहा शक्तावत
कक्षा- छठी

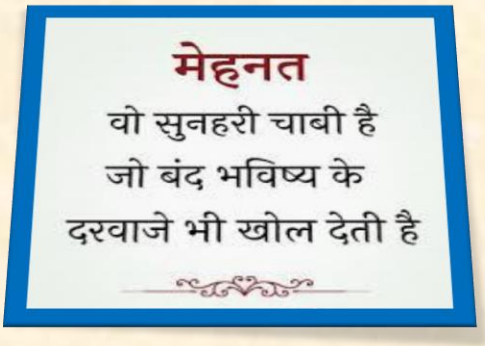

## तीन मित्रों की सोच

एक बार की बात है तीन लोग एक तालाब के पास बैठे हुए थे | कुछ लोग उस तालाब में तैर रहे थे | तीनों व्यक्ति उन तैरने वालों को देखकर अपने मन में अलग-अलग विचार प्रकट कर रहे थे | पहला सोच रहा था कि अगर मैंने इसमें छलांग लगा दी और मैं डूब गया तो क्या हो | मैं मर गया तो मेरे परिवार का क्या होगा ? उसका ध्यान कौन रखेगा? उसे यह काम बहुत मुश्किल लगा| उसने कभी तैरने की कोशिश ही नहीं की, ना करने के उसके पास हजार कारण थे | उसके मन में कभी हिम्मत ही नहीं हुई| उसके मन में डर बैठ गया था | दूसरा व्यक्ति सोच रहा था तैरना कितना आसान है | बस हाथ पैर ही तो हिलाने है| उसे तैरना नहीं आता था, लेकिन वह अपने आत्मविश्वास के कारण तालाब में बिना सोचे समझे कूद गया| लोगों ने उसे बचा लिया और फिर उसने मरते दम तक कभी नया करने की कोशिश ही नहीं की | तीसरा व्यक्ति उसको देख कर सोचने लगा, सब लोग मेरे जैसे ही तो है; अगर ये कर सकते हैं, तो मैं क्यों नहीं कर सकता? उसने उन लोगों से पूछा कि उन्होंने तैरना कहाँ से सीखा और उसने भी तैरना सीखना शुरू कर दिया | धीरे-धीरे उसने अच्छे से सीख लिया | अब वह जहाँ चाहे वहाँ तैर सकता है, जैसे चाहे वैसे तैर सकता है, उसे कोई नहीं रोक सकता है| हमें कभी भी किसी काम को जल्दबाजी में बिना सोचे समझे नहीं करना चाहिए और न ही डर कर पीछे हटना चाहिए बल्कि उस काम को करने की कोशिश अवश्य करनी चाहिए

नाम- रीना कुमारी
कक्षा -ग्यारहवीं

## बेटियों के सपने

एक समय की बात है | एक छोटे घर की बेटी उसके स्कूल में बैडमिंटन का खेल जीती थी उसका नाम था लीला | वह बहुत खुश थी | घर पर आकर उसने अपने पिताजी को बताया, फिर उसके पिताजी ने कहा कि खेलना, पढ़ना जरूरी नहीं है | अपनी माँ का घर के कामों में हाथ बंटाओ | वह बहुत दुखी हुई | अगले दिन उसके पिताजी के जानकार आए थे उन्होंने कहा कि मेरी बेटी टीचर बनने गई है | लीला के पिता ने उनसे कहा कि बेटियों को पढ़ाओ मत | उसने बोला कि अगर सबकी सोच आप जैसी हो तो घर की बेटियाँ कुछ कर ही नहीं पाएँगी |

शिक्षा- किसी के सपने चूर-चूर नहीं करें | बेटियों को भी पढ़ने का अवसर दें |

नाम- तनीषा
कक्षा- सातवीं

## विज्ञान शिक्षक

अकबर बाबर की युद्ध कथा से हमें नहीं उबाते हैं ,
अलजेब्रा के जटिल सवालों में कभी नहीं उलझाते हैं |
संस्कृत के कठिन श्लोकों में हमें नहीं फँसाते हैं ,
भूगोल के गोल ग्लोब का चक्कर नहीं लगवाते हैं,
विद्यालय के विज्ञान शिक्षक सबके मन को भाते हैं ||
वैज्ञानिक अनुसंधान व खोजों से अपडेट हमें रखते हैं,
सत्यपरक विज्ञान की बातें सदा हमें बतलाते हैं |
न्यूटन आइंस्टाइन आर्कमिडीज के सिद्धांतों से रूबरू हमें कराते हैं,
विद्यालय के विज्ञान शिक्षक सबके मन को भाते हैं ||
जीव जंतु एवं पेड़ पौधों का जीवन चक्र समझाते हैं,
सिद्ध सिद्धांत व प्रयोगों द्वारा विषय को सरल बनाते हैं,
सूक्ष्म जीवों से सदा बचाव का स्वच्छ पाठ पढ़ाते हैं |
साइंस टैंक के अथाह सागर में गोता हमें लगवाते हैं ,
विद्यालय के विज्ञान शिक्षक सबके मन को भाते हैं ||

नाम- मोनिका
कक्षा -नौवीं

## स्वच्छ राष्ट्र को तोहफा

स्वच्छ रहोगे, स्वस्थ बनोगे, गांधी का यह कहना था |
आजाद और स्वच्छ भारत का, बापू ने देखा सपना था ||
कहते थे शौचालय को भी रसोई घर जैसा साफ रखो,
घर हो चाहे गली मुहल्ला, खुद अपने से साफ करो |
साफ सफाई ईश्वर की भक्ति जैसी ही होती है,
साफ सफाई होती है जहाँ, वहां बीमारी नहीं होती है ||
अफ्रीका में भारतीयों को पहला संदेश सुनाया था,
स्वच्छता का जीवन में ऊंचा स्थान बताया था |
गांधी जी के सपनों को अब अपना सपना मान लिया,
जन्म दिवस पर बापू को कुछ तो देना ही होगा,
राष्ट्रपिता को स्वच्छ राष्ट्र का तोहफा देना ही होगा ||

नाम- पूर्ति कुमारी मेहता
कक्षा -नौवीं

## सूर्य बनो कुछ रातों के

सूर्य बनो कुछ रातों के ,
जुगनू बनने से क्या होगा |
भंवरे बनो पुष्पों के ,
खुशबू बनने से क्या होगा ||
सेवा करो मात-पिता, गुरुओं की ,
व्यर्थ की चापलूसी से क्या होगा |
भारतवर्ष को विश्व गुरु बनाओ पुत्र ,
दुनिया का आयातक बनने से क्या होगा ||
सूर्य बनो कुछ रातों के .....
बने हमारा जीवन ऐसा,
डगे न अपना जमीर, चाहे समय हो कैसा|
कर यत्न होगा सब संभव,
कहो भला जग में क्या है असंभव ||
बने हम आजाद, अशफाक,
जयचंद, सिराजुद्दौला बनने से क्या होगा |
हो हम में ऐसा पराक्रम
राष्ट्र उन्नति हो परमो धर्म
सूर्य बनो कुछ रातों के.....

नाम -रामभरोस लोधा 'तेजस'
कक्षा- बारहवीं

## जीता हूं मैं

जीता हूं मैं सीने में आग लिए,
वाणी में अपनी धार लिए |
जीता हूं मैं दुनिया में मगर ,
जीता नहीं दुनिया के लिए ||
यह जग न समझे मुझको ,
ना मैं जानना चाहूँ इसको |
हूँ तन्हा तो आज भी ,
पर जीता हूँ मैं अपनों के लिए ,
जीता हूं मैं सीने .....
वाणी में अपनी.....
अब चाहिए तमीज मुस्कुराने के लिए ,
और तन्हाई आँसुओं के लिए |
कभी बेपरवाह मैं हँसता था ,
जिंदगी को जिंदगी बनाने के लिए ||
जीता हूँ मैं .....
वाणी में अपनी .....
दुनिया में निकल कर देखा तो ,
तजुर्बा मेरा कच्चा था |
मैं सीख ना पाया झूठ फरेब ,
इसलिए मैं तो अभी बच्चा था ||
झुकना जरूरी होता है ,
पेड़ों को आँधियाँ सहने के लिए |
तूफान जरूरी होता है ,
दरख्तों के हश्र के लिए ||
जीता हूँ मैं .....

नाम -राम कृष्ण अहीर
कक्षा- बारहवीं

**छोटे से छोटे कार्यों में अपना हृदय,**
**मन तथा आत्मा डाल दो |**
**यही सफलता का रहस्य है |**

द्वारा- स्वामी विवेकानंद

## मेरी प्यारी माँ

मेरी प्यारी माँ, मेरी प्यारी माँ,
तेरी जगह कोई ले नहीं सकता ,
तेरा वास्ता कोई दे नहीं सकता|
तेरी गोद में पली हूँ, तेरी साँसों में अटकी हूँ,
तेरी सांसो में सोई हूँ, तेरे पल्लू में रोई हूँ |
तेरा हाथ है मेरे सिर पर, तेरा साथ है मेरे ऊपर |
मैंने अभी दुनिया देखी नहीं, पर महसूस की है ,
सच कहती हूँ तेरी जगह कोई ले नहीं सकता |
तू भगवान से भी ऊपर है, मेरी दुनिया तू है |
मेरी प्यारी मां ||

नाम- सिमरन मेहता
कक्षा- छठी

## माँ की ममता

माँ की ममता ईश्वर का वरदान है,
सच पूछो तो माँ इंसान नहीं भगवान है|
माँ के चरणों में जन्नत का हर रूप होता है,
माँ में ही ईश्वर का हर स्वरूप होता है||
माँ जो हर बच्चे के दिल की चाह होती है,
मुसीबत में एक नई राह होती है |
जो हर किसी के करीब नहीं होती,
जो हर किसी को नसीब नहीं होती,
माँ की अहमियत उनसे पूछो जिनके माँ नहीं होती है |
जो हर बच्चे की जान होती है,
जो हर रिश्ते का मान होती है |
सभी का एकमात्र अरमान होती है,
हर किसी को माँ की ममता मिले,
अपनी माँ से कभी कोई ना बिछड़े,
यही है मेरी एकमात्र दुआ उस खुदा से
जिनके माँ है उन्हें क्या पता कि माँ क्या होती है |
माँ को जानना है तो उनसे पूछो जिनके माँ नहीं होती है ||
सारी दुनिया छोटी पड़ जाती है,
लेकिन भगवान का घर और माँ का आँचल, कभी छोटा नहीं पड़ता ||

नाम -हर्षिता मीना
कक्षा -नौवीं

## कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

एक गाँव में दो दोस्त रहते थे | वे कुछ भी काम नहीं करते थे | उन्होंने गाँव की औरतों को देखा कि वे सभी एक नदी में से पानी भर कर ला रही हैं | वह सिर्फ दिन में दो बार ही पानी ला पाती थीं | एक दोस्त ने सोचा हम पानी भरने का काम कर लें | वे दोनों ₹25 में एक-एक मटकी पानी भरने लगे | यह काम करते-करते दस-बीस साल हो गए | जिस दोस्त ने मटका भरने का विचार दिया वह सोचने लगा अभी तो हम मटके भर सकते हैं पर बुढ़ापे में क्या करेंगे ? दूसरे ने कहा तू जा मैं तो यही काम करूंगा | पहला दोस्त दूसरे गाँव में काम की तलाश करने लगा | उसने कुम्हार को मटकी बनाते देखा | उसने सोचा जब मिट्टी की मटकी बन सकती है तो वह एक मिट्टी की पाइप लाइन क्यों नहीं बना सकता | कुम्हार ने इस काम को करने से मना कर दिया फिर उसने मटकी बनाना सीखा | इसके बाद छोटे छोटे पाइप बना दिए | फिर सबको जोड़ दिया और अब नदी का पानी पाइप लाइन के द्वारा गाँव में आने लगा | आसपास के लोग भी पाइप लाइन लगवाने उसके पास आने लगे और उसकी गिनती अमीरों में की जाने लगी |

शिक्षा: हमें कभी भी किसी काम को अधूरा नहीं छोड़ना चाहिए | काम को करने की लगातार कोशिश करते रहना चाहिए | सफलता अवश्य मिलेगी |

नाम- पूनम मेहता
कक्षा- ग्यारहवीं

## निरंतर अभ्यास का फल

एक बार की बात है दो भाई थे | वे दोनों स्कूल जाते थे | एक दिन उनके अध्यापक ने सभी बच्चों से कहा कि मैं तुम सबसे कल हिंदी के सवालों के उत्तर पूछूँगा | उसके बाद छुट्टी हो गई | दोनों भाइयों ने अच्छी तरह से उत्तर याद कर लिए | दूसरे दिन वे स्कूल आए लेकिन उनके अध्यापक पाँच दिन के लिए बाहर गए थे उसके बाद छुट्टी हो गई | छोटे भाई ने उन सवालों के उत्तर पाँच दिन तक याद किए और बड़े भाई ने सोचा कि मुझे तो याद है | पाँच दिन बाद अध्यापक आए और सब बच्चों से सवालों के जवाब पूछने लगे | तब छोटे भाई की बारी आई तो छोटे भाई ने सब सवालों के जवाब दे दिए | उसके बाद बड़े भाई की बारी आई तो बड़े भाई सवालों के जवाब नहीं दे पाए और अध्यापक ने बड़े भाई को खूब डाँटा|

शिक्षा- हमें लगातार अभ्यास करते रहना चाहिए|

नाम- अरुण वर्मा
कक्षा- सातवीं

## बात जो दिल को छू गई

किसी गाँव में एक ताले वाले की दुकान थी | ताले वाला रोजाना अनेकों चाबियाँ बनाया करता था | ताले वाले की दुकान में एक हथौड़ा भी था | वह हथौड़ा रोज देखा करता कि यह चाबी इतने मजबूत ताले को भी कितनी आसानी से खोल देती है | एक दिन हथौड़े ने चाबी से पूछा कि मैं तुमसे ज्यादा शक्तिशाली हूँ, मेरे अंदर लोहा भी तुमसे ज्यादा है और आकार में भी तुमसे बड़ा हूँ, लेकिन फिर भी ताला तोड़ने में बहुत समय लगता है और तुम इतनी छोटी हो फिर भी इतनी आसानी से मजबूत ताला कैसे खोल देती हो? चाबी ने मुस्कुराकर ताले से कहा कि तुम ताले पर ऊपर से प्रहार करते हो और उसे तोड़ने की कोशिश करते हो, लेकिन मैं ताले के अंदर तक जाती हूँ | उसके अंतर्मन को छूती हूँ | घूमकर ताले से निवेदन करती हूँ और ताला खुल जाता है | वाह! कितनी अच्छी बात कही है चाबी ने कि मैं ताले के अंतर्मन को छूती हूँ और वह खुल जाता है| दोस्तों आप कितने भी शक्तिशाली हो या कितनी भी आपके पास ताकत हो लेकिन जब तक आप लोगों के दिल में नहीं उतरेंगे, उनके अंतर्मन को नहीं छुएँगे, तब तक कोई आपकी इज्जत नहीं करेगा | हथौड़े के प्रहार से ताला खुलता नहीं बल्कि टूट जाता है| ठीक वैसे ही अगर आप शक्ति के बल पर कुछ काम करना चाहते हैं तो आप सौ प्रतिशत नाकामयाब रहेंगे क्योंकि शक्ति से आप किसी के दिल को नहीं छू सकते | पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम आजाद कोई पहलवान नहीं थे लेकिन उनकी बातों ने और उनके आविष्कारों ने लोगों के दिल को छुआ | कलाम जी ने लोगों के अंतर्मन में जगह बनाई | इसलिए आज जीवित ना होते हुए भी वह हम लोगों के दिल में जिंदा है|

शिक्षा: दोस्तों चाबी बनो सबके दिल की| यही इस कहानी की सीख है|

नाम -मनीष लोधा
कक्षा- आठवीं

## स्त्री और पुरुष

विपिन बाबू के लिए स्त्री ही संसार की सुंदर वस्तु थी | वह कवि थे और उनकी कविता के लिए स्त्रियों के रूप और यौवन की प्रशंसा ही सब से चित्ताकर्षक विषय था | उनकी दृष्टि में स्त्री जगत में व्याप्त कोमलता, माधुर्य और अलंकारों की सजीव प्रतिमा थी | जबान पर स्त्री का नाम आते ही उनकी आँखें जगमगा उठती थी, कान खड़े हो जाते थे, मानो किसी रसिक ने गाने की आवाज सुन ली हो | जब से होश संभाला तभी से उन्होंने उस सुंदरी और वीर स्त्री लक्ष्मी बाई की कहानी सुनी | तब से उनको स्त्री जाति पर भरोसा हो गया कि स्त्री सिर्फ कोमलांगी ही नहीं, बल्कि पुरुष के समान वीरता के कर्मों को भी अंजाम देती है |

नाम- मुस्कान
कक्षा- सातवीं

# क्या हो अगर खेती ना हो तो

भारत एक कृषि प्रधान देश है यह हम सब जानते हैं | हमारे देश में कई प्रकार की फसलें, फल-फूल आदि पैदा किए जाते हैं | हमारे देश के विकास में कृषि का बड़ा योगदान है, लेकिन इसे हमारा दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि जिस देश में जय जवान, जय किसान के नारे लगाए जाते हैं वहीं हजारों किसान अपनी जान दे रहे हैं | हर दिन हम यह खबर समाचार पत्रों में देखते हैं | पिछले 10 सालों में लाखों किसानों ने खेती छोड़ दी और गाँव से अपना घर, जमीन, कुएँ आदि बेचकर शहरों की ओर बढ़ने लगे हैं | अगर सब लोग ऐसा ही करने लगेंगे तो हमारे देश का भविष्य खतरे में आ जायेगा | हमारे पास दूसरे देशों से लड़ने के लिए बहुत अच्छे हथियार हैं, रहने के लिए घर भी है, विज्ञान की दी गई सुख सुविधाएँ भी है ,परंतु खाने के बिना कोई जी सकेगा ? खाना तो सब खाना चाहते हैं, परंतु खेती कोई नहीं करना चाहता है | पूरी दुनिया में भारत ही एक ऐसा देश है जो केलों का निर्यात करता है | मसाला उत्पादन में भारत सबसे आगे हैं | किसान अपनी पूरी मेहनत झोंक देते हैं अपनी फसल के लिए लेकिन सवाल यह उठता है कि किसान आत्महत्या क्यों कर रहे हैं? क्यों खेती करने वाला किसान छोटे शहरों में मजदूरी करने को मजबूर है? इसके लिए सबसे ज्यादा जिम्मेदार है हमारे देश के अधिकारी, जो रिश्वत लेते हैं और धोखाधड़ी करते हैं | हमारे देश में दूसरों के मुकाबले में ज्यादा अनाज पैदा होता है पर फसल खराब हो जाती है या अनाज गोदामों में पड़ा रहता है, जो सड़ जाता है | उसके बाद उन देशों से अनाज खरीदा जाता है जो हमारे देश से कम अनाज पैदा करते हैं और महँगे दामों में खरीदकर किसानों के लिए सरकार हर वर्ष अलग-अलग योजनाएँ बनाती है लेकिन ये योजनाएँ कागजों में ही होती हैं लागू ही नहीं होती है | खेती करना बहुत मुश्किल काम होता है | फसल खराब होने के हजार कारण है; जैसे -बाढ़ का आना, प्राकृतिक आपदा, सूखा पड़ना, सिंचाई क्षेत्र में कमी, इन सब से फसल खराब हो जाती है | इन सब कारणों से किसानों की हालत खराब हो जाती है और वे गरीब होते चले जाते हैं | सरकार ने बीमा योजना, फसल बीमा आदि जैसी योजनाएँ भी बनाई | परंतु किसान को इनकी जानकारी नहीं होती है | सरकार को इन योजनाओं का प्रचार-प्रसार कर लोगों को जागरुक करना चाहिए | सरकार को कृषि क्षेत्र में पूरा योगदान देना चाहिए | नये-नये रोजगार उपलब्ध करवाने चाहिए | अगर सरकार का लोगों के प्रति जो कर्तव्य है, यदि उस कर्त्तव्य को सरकार भूल गई तो अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी कहे जाने वाले किसान खेती करना छोड़ देंगे और भारत देश की रीढ़ की हड्डी टूट जाएगी |

नाम- सुगना मेहता
कक्षा- ग्यारहवीं

बहुत ही खूबसूरत शब्द लिखे थे, दुनिया में छोड़ने जैसा कुछ है तो, दूसरों को नीचे दिखाना छोड़ दो |

## माँ की महिमा (अपने शब्दों में)

माँ और माँ का प्यार निराला,
उसने ही है मुझको संभाला,
मेरी मम्मी बड़ी प्यारी,
मेरी मम्मी बड़ी निराली |
क्या मैं उनकी बात बताऊँ,
सोचती हूं उन्हें कैसे मैं जान पाऊँ ||

सुबह सवेरे मुझे उठाती
बिटिया कह कर मुझे जगाती,
जल्दी से तैयार मुझे करती,
उनके कारण स्कूल मैं जा पाती |
स्कूल से आते ही खुश होती,
जब मम्मी का चेहरा देखती,
पौष्टिक भोजन मुझे खिलाती,
गृह कार्य भी पूरा करवाती ||

मुझ पर गुस्सा जब है आता,
दो मिनट में उड़ भी जाता,
मेरी मम्मी मेरी जान,
रखती मेरा पूरा ध्यान |
माँ और माँ का प्यार निराला
उसने ही है मुझे संभाला ||

नाम -प्राची पारवानी
कक्षा -नौवीं

## समय की कीमत क्या है? यह इनसे पूछो |

एक साल की कीमत जानना चाहें ,
तो ऐसे विद्यार्थी से पूछिए, जो फेल हो गया है |
एक महीने की कीमत जानना चाहें,
तो ऐसी माँ से पूछें, जिसने प्रीमैच्योर बच्चे को जन्म दिया है |
एक दिन की कीमत उस व्यक्ति से पूछें ,
जो एक दिन लेट जॉइनिंग रिपोर्ट देने के कारण अपने कलिग का सारी उम्र जूनियर बना रहता है |
एक मिनट की कीमत जानना चाहें ,
तो उस यात्री से पूछें, जो अभी-अभी दुर्घटना से बचा है |
एक मिली सेकंड की कीमत जानना चाहें ,
तो उस धावक से पूछें ,
जिसने ओलंपिक दौड़ में गोल्ड मेडल जीता या हारा है |
अच्छे भाग्य का इंतजार न करें,
अपने सौभाग्य की कुंडली खुद लिखें,
क्योंकि जीवन में रिहर्सल का अवसर नहीं मिलता |

नाम- पूजा मीना
कक्षा- बारहवीं

## जो जैसा सोचता है वैसा ही बन जाता है

बहुत समय पहले की बात है | किसी पहाड़ की तलहटी में एक वृद्ध संन्यासी रहता था | वह इस बात के लिए प्रसिद्ध था कि उससे जो भी प्रश्न पूछा जाता था उसका वह सही उत्तर देता था | एक दिन दो शरारती बच्चों ने उस संन्यासी को गलत ठहराने का निश्चय किया | उन्होंने एक चिड़िया पकड़ी और उस बूढ़े संन्यासी के घर की ओर चल पड़े | वे दोनों आपस में बात करने लगे कि हम हाथ पीछे की तरफ करके उससे पूछेंगे कि हमारे हाथ में क्या है? यदि वह बताता है कि पक्षी है, तो पूछेंगे कौन सा पक्षी है? यदि उसने कहा चिड़िया, तो हम पूछेंगे कि बताओ यह जिंदा है या मरी हुई? अगर उसने बताया कि जिंदा है तो हम चिड़िया को मार देंगे और उसे गलत सिद्ध कर देंगे | अगर उसने बताया कि मरी हुई है तो हम चिड़िया को उड़ा कर उसे गलत सिद्ध कर देंगे | आखिरकार वे दोनों उसके घर पहुंचे और पूछा, महात्मा जी क्या आप बता सकते हैं कि हमारे हाथों में क्या है? वृद्ध आदमी ने कुछ देर सोचा और बोला -एक पक्षी | उन्होंने पूछा कि किस प्रकार का पक्षी? वृद्ध ने कहा- चिड़िया | अंत में उन दोनों बच्चों ने उत्तेजना से पूछा, बताइए कि यह जिंदा है या मरी हुई? आदमी ने कहा- बच्चों ! वैसी ही जैसी तुमने अपने हाथों में पकड़ी हुई है | शिक्षा- हमारे मन के अंदर एक विचार रूपी चिड़िया है | जिस प्रकार चिड़िया को जिंदा रखना या मारना बच्चों के हाथ में था, उसी तरह विचारों का सकारात्मक या नकारात्मक रखना हमारे हाथ में है |

नाम- शिवानी मेहता, कक्षा- बारहवीं

## क्या है एग्जाम?

एग्जाम क्या है ?
एक चुनौती, लेकिन उन्हीं के लिए जो उसे स्वीकारते हैं और खुद को प्रमाणित करते हैं|
एग्जाम क्या है? एक अमूल्य अवसर, लेकिन उन्हीं के लिए जिन्होंने सही तैयारी की हो और परीक्षा देने की कला में निपुण हो |
एग्जाम क्या है ?
चक्रव्यूह है, लेकिन उन्हीं के लिए जो निडर हो और इसे भेदने की कला में माहिर हो |
एग्जाम क्या है ?
एक पर्वत शिखर, लेकिन उन्हीं के लिए जो बाधाओं की परवाह न करते हुए शिखर पर पहुँचकर जीत की पताका फहराते हैं |

"NOTHING IS IMPOSSIBLE EVEN
THE WORD 'IMPOSSIBLE' ITSELF SAYS
'I'M POSSIBLE"

नाम- वंदना मेहता
कक्षा- बारहवीं

## भाग्यवादी नहीं, कर्म योगी बनो !

भाग्यवादी अपने दुर्भाग्य को कोसते हैं, कर्म योगी अपने दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदलते हैं |

भाग्यवादी रेखाओं और ग्रहों की शरण में जाते हैं, कर्म योगी पसीने से कल्पवृक्ष को सींचकर मनचाहा फल पाते हैं |

भाग्यवादी मानते हैं कि समय से पहले व भाग्य से ज्यादा कुछ नहीं मिलता, कर्मयोगी मानते हैं कि जमीन में बीज डाले बिना फसल की आशा नहीं की जा सकती |

भाग्यवादी चमत्कार होने का इंतजार करते हैं, कर्मयोगी चमत्कार कर दिखाते हैं |

तुम स्वयं ही अपने भाग्य निर्माता हो,
तुम्हें जो भी बल या सहायता चाहिए,
वह तुम्हारे भीतर ही विद्यमान है |
द्वारा: स्वामी विवेकानंद

मुश्किलें दिल के इरादे आजमाती है स्वप्न के परदे निगाहों से हटाती हैं हौसला मत हार गिरकर वह मुसाफिर ठोकरें इंसान को चलना सिखाती है

नाम- अंकिता लोधा
कक्षा- बारहवीं

## हम वीर बहादुर बच्चे हैं

हम वीर बहादुर बच्चे हैं,
भारत के सेवक सच्चे हैं |
जो माँ पर आँख उठाएगा,
वह मिट्टी में मिल जाएगा ||
हम पत्थर को मोम बना देंगे,
काँटों में फूल खिला देंगे |
हम विद्या पढ़ने जाते हैं,
ईश्वर को शीश झुकाते हैं ||
! जय हिंद !जय भारत !

नाम -अंजली बैरवा
कक्षा -सातवीं

## पेड़ और हरी दूब

एक था ओक का दरख़्त, कोई सौ साल पुराना | वह बड़ा विशालकाय था पर एक बार जोर की आँधी चली तो वह विशाल पेड़ गिर गया | जहाँ वह ओक का विशाल पेड़ गिरा था, वहीं पास में दूब उगी हुई थी, दूब के पत्ते हवा में सरसरा रहे थे | इतनी तेज आँधी में भी उनका कुछ नहीं बिगड़ा | ओक को यह देख कर बड़ी हैरानी हुई | उसने पूछा -क्यों दूब बहन एक बात बताओ, आँधी ने मुझ जैसे शक्तिशाली पेड़ को तो उखाड़ दिया पर तुम्हारा बाल बाँका तक नहीं हुआ | ऐसा क्यों? आखिर तुम्हारी शक्ति का रहस्य क्या है? इस पर दूब ने कहा -'बस छोटी सी बात है, वह यह कि तुम तेज हवा चलने पर तनकर खड़े हो जाते हो जरा भी झुकना बर्दाश्त नहीं करते, जबकि तेज हवा चलने पर मैं झुक जाती हूँ और बाद में फिर आराम से लहलहाने लगती हूँ | बस इसी कारण बड़ी से बड़ी आँधी मुझे उखाड़ नहीं पाती |

**शिक्षा - हमें जीवन में झुकना सीखना चाहिए |**

नाम - दिव्या माहवार
कक्षा - आठवीं

## हमारी जिंदगी में मित्र का महत्व

किसी ने सही ही कहा है मित्र परिवार है क्योंकि जिस प्रकार हम अपने परिवार के लोगों से प्यार करते हैं और उनके बिना हम एक दिन भी नहीं रह सकते हैं, उसी प्रकार हम अपने मित्रों से बेहद प्यार करते हैं और हम उनके बिना नहीं रह सकते हैं | कुछ मित्र बहुत प्यारे होते और वह हमेशा हमें खुश रखते हैं | मेरे दोस्त मुझे बहुत अच्छे लगते हैं, मुझे उनका मजाक, भोलापन, मासूमियत और उनकी मुस्कान अच्छी लगती है | मैं मेरे दोस्तों को बचपन से जानती हूँ वे मुझसे बहुत प्यार करते हैं | अगर आपके जीवन में कोई दोस्त न हो तो जीवन सूना-सूना लगता है और जीवन जीने में कोई मजा नहीं आता है | जीवन में दोस्त के होने से जीवन की मुश्किलें कम हो जाती हैं और जीवन सरल लगता है | हमारे जीवन में मित्र बहुत महत्वपूर्ण है, उनके बिना जीवन अधूरा सा लगता है | कुछ बातें हम अपने माता-पिता को नहीं कह पाते, उन्हें हम अपने मित्रों से कह सकते हैं | दोस्त या मित्र माता-पिता के बाद दूसरे स्थान पर आते हैं | जिस प्रकार बच्चे अपनी माता के बिना या उन्हें देखे बिना रह नहीं पाते, उसी प्रकार मैं भी अपने मित्रों के बिना नहीं रह सकती हूँ | हम अपने मन की पीड़ा किसी से नहीं कहते हैं पर एक सच्चा दोस्त उसे बिना कहे ही समझ जाता है | जो मजा दोस्तों के साथ बातें करने में, खेलने में, लड़ने में है | वो मजा दुनियाँ की किसी चीज में नहीं आता है | अतः जीवन में अच्छे दोस्तों का बहुत महत्व है | जीवन में अच्छे दोस्तों का होना या मिलना बहुत जरूरी होता है |

नाम - सलोनी मेहता
कक्षा - ग्यारहवीं

## स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत

विश्व स्वास्थ्य संगठन की दृष्टि में भारत में स्वच्छता की कमी है, अनेक क्षेत्रों में गंदगी का फैलाव दिखाई देता है | राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी भी 'क्लीन इंडिया' का सपना देखते थे, उन्हीं के सपने को संदेश रूप में लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रव्यापी 'स्वच्छ भारत अभियान' का शुभारंभ 2 अक्टूबर 2014 को गाँधी जयंती के अवसर पर किया |

हमारे देश में शहरों के आसपास की कच्ची बस्तियों में, गाँवों एवं ढाणियों में शौचालय नहीं हैं | विद्यालयों में भी पेयजल एवं शौचालयों की कमी है | इससे खुले में शौच करने से गंदगी बढ़ती है तथा पेयजल के साथ ही वातावरण भी दूषित होता है | गंदगी के कारण स्वास्थ्य खराब रहता है और अनेक बीमारियों पर नागरिकों को खर्चा करना पड़ता है | स्वच्छता अभियान का पहला उद्देश्य शौचालयों का निर्माण करना तथा स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था करना है और देश को गंदगी से मुक्त कराना है |

इस अभियान से सबसे बड़ा लाभ स्वास्थ्य के क्षेत्र में होगा | लोगों को बीमारियों से मुक्ति मिलेगी, दवाइयों पर अपव्यय नहीं करना पड़ेगा | सारा भारत स्वच्छ बन जाएगा तो देशों में भारत की स्वच्छ छवि उभरेगी | स्वच्छ भारत अभियान अब अपने अंतिम चरण में है, इसे गाँधी जी की 150वीं जयंती तक चला कर देश को स्वच्छ भारत के रूप में प्रस्तुत करना है | सरकार के इस अभियान में जनता का सक्रिय सहयोग नितांत अपेक्षित है | प्रतिबद्धता रहेगी तो सफलता अवश्य मिलेगी |

नाम - अजय चौधरी

कक्षा - नौवीं

## पानी बचाओ

माना पानी का नहीं है मोल, पर जीवन के लिए है यह अनमोल |
साँसे जहाँ चलती है, वहीं पानी से पनपती है ||
यह महज एक कविता नहीं, जीवन की एक सीख है|
पानी बचाओ, पानी बचाओ, वरना दुखदाई अंत है ||
जल की कोई सीमा नहीं, पर पीने को वो योग्य नहीं |
जो जल जीवन बनता है, वह हर जगह नहीं मिल पाता है ||
पानी बचाओ ! पानी बचाओ !

नाम - शशि

कक्षा - पाँचवी

## दादी नानी की कहानी (लौहार की कैद में यमराज)

सदियों पहले की बात है | एक महात्मा अपने शिष्यों के साथ घूम रहे थे | एक दिन घूमते हुए रात में वे एक लौहार की दुकान पर पहुँचे और रात बिताने के लिए जगह माँगी | लौहार ने उन्हें अपने घर में पनाह दे दी, लौहार ने उनकी खूब सेवा की | सुबह महात्मा जी ने लोगों से कहा- हम तुम्हारी सेवा से बहुत प्रसन्न हैं | मांगो कोई दो वरदान ! लौहार ने कहा- पहला वरदान दीजिए कि मेरी आयु 100 वर्ष हो जाए | महात्मा जी ने कहा- तथास्तु | दूसरा वरदान मांगो, लौहार ने कहा कि जिस कुर्सी पर आप बैठे थे, उस पर जब कोई दूसरा बैठे तो मेरी मर्जी के बिना नहीं उठ सके, ऐसा ही होगा कहकर महात्मा जी अपने शिष्यों के साथ वहाँ से चले गए | लौहार के साथ संगी साथी, रिश्तेदार एक-एक करके अपना समय आने पर मृत्यु को प्राप्त हुए | लेकिन लौहार वैसा का वैसा हट्टा कट्टा बना रहा | आखिरकार लौहार के 100 वर्ष पूरे हुए | साक्षात् यमराज उसको लेने आए, लेकिन लौहार ने कहा कि मैं जरा अपने औजार संभाल कर रख दूं, तब तक आप इस कुर्सी पर विराजिए | यमराज जैसे ही कुर्सी पर बैठे लौहार जोर से हँस पड़ा और कहने लगा- अब आप यहाँ से मेरी मर्जी के बिना नहीं जा सकते | यमराज ने बड़ी कोशिश की पर वह कुर्सी पर से नहीं उठ सके | अब पृथ्वी पर किसी की मृत्यु नहीं हुई | अगला वर्ष आते-आते मुसीबतें बढ़ने लगीं | लाखों जीव जंतु पैदा हो गए | उन्होंने फसलों, घरों एवं सभी चीजों को नुकसान पहुँचाया | आखिरकार लौहार तंग आ गया | उसने यमराज को छोड़ दिया और यमराज ने उसके गले में अपना फंदा डाला और ले चले उसको यमलोक | धीरे धीरे सब कुछ सामान्य रूप से चलने लगा | इसलिए कहा गया है कि अति किसी भी चीज की बुरी होती है|

नाम- अंजली मीना
कक्षा- दसवीं

## सुगम एवं सुरक्षित यातायात संबंधी जानकारी

1. वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग न करें, इसी में है आपकी वह दूसरों की सुरक्षा |
2. शराब पीकर वाहन न चलाएँ, जीवन है अनमोल से न गवाएँ |
3. अपने वाहन को निर्धारित स्थान पर ही पार्क करें, सही पार्किंग सबकी सुविधा |
4. ऑटो रिक्शा में क्षमता से अधिक सवारी न बैठें |
5. धीमी गति के वाहन, रिफ्लेक्टर का प्रयोग करें |
6. सड़क पार करते समय जेब्रा लाइन का प्रयोग करें |

नाम - वर्षा रानी
कक्षा - नौवीं

## गुरु की महिमा (संकलन)

(1) जीवन के घोर अंधेरों में,
प्रकाश जो बनकर आता है,
हर लेता है वह दुख जो सारे,
खुशियों की फसल उगाता है |
न कोई लालच करता है,
सच्चाई का सबक सिखाता है,
सागर-सा ज्ञान से भरा हुआ,
बस वही गुरु कहलाता है ||

(2) परेशानियाँ तंग करे जब,
हिम्मत हम हारते जाएँ,
मुश्किल-सी हो परिस्थितियाँ,
हालात हमें जब भटकाएँ |
नई राह एक दिखाकर हमको,
सभी कठिनाईयाँ मिटाता जो,
सागर-सा ज्ञान से भरा हुआ,
बस वही गुरु कहलाता है ||

(3) नहीं अहंकार में कभी रहे,
हर बात सदा ही सत्य कहे,
उसके पावन उपदेशों में,
अनुभव की सदा तरंग बहे |
कोई आम व्यक्ति नहीं वह,
हर देश का भाग्य विधाता है,
सागर-सा ज्ञान से भरा हुआ,
बस वही गुरु कहलाता है ||

नाम- दिनेश लोधा
कक्षा- दसवीं

## प्रकृति का सन्देश

(1) चिड़ियों से है उड़ना सीखा,
तितली से इठलाना |
भंवरों की गुंजन से सीखा,
राग मधुरतम गाना ||

(2) तेज लिया सूरज से हमने,
चांद से शीतल छाया |
टिम -टिम करते तारों की ||
हम समझ गए माया ||

(3) सागर ने सिखलाई हमको,
गहरी सोच की धारा |
गगनचुंबी पर्वत से सीखा,
हो ऊँचा लक्ष्य हमारा |

(4) समय की टिक-टिक ने समझाया,
सदा ही चलते रहना |
मुश्किल कितनी आन पड़े,
पर कभी न धीरज खोना ||

(5) प्रकृति के कण-कण में है,
सुंदर संदेश समाया |
ईश्वर ने इसके द्वारा जो,
अपना रूप दिखाया ||

नाम- अमनदीप सिंह
कक्षा- नौवीं

## सुविचार

- गलत तरीके अपनाकर सफल होने से बेहतर है, सही तरीके के साथ काम करके असफल होना |
- जिंदगी बहुत खूबसूरत है, इसे बेकार की बातों और झगड़ों में बर्बाद न करें |
- अगर आप बोलेंगे तो जानी हुई बातें ही दोहराएँगे, पर सुनने पर कुछ नया सीखेंगे |
- हर दिन अच्छा ही हो जरूरी नहीं है, लेकिन हर दिन कुछ अच्छा जरूर होता है |
- तुम पानी जैसे बनो जो अपना रास्ता खुद बनाता है, पत्थर जैसे न बनो जो दूसरों का भी रास्ता रोक लेता है |

नाम- विशाल मीणा
कक्षा - नौवीं

## मेरे सपनों का भारत

आजादी के साल हुए कई, पर क्या हमने पाया है |
सोचा था कुछ होगा, लेकिन सामने क्या आया है ||
रामराज्य सा देश है अपना, बापू का था सपना,
चाचा बोले आगे बढ़कर, कर लो सबको अपना |
आजादी फिर छीने न अपनी, दीया शास्त्री ने नारा ||

नाम- कुमकुम मीना
कक्षा - 6

## आजकल के स्टूडेंट

आजकल के स्टूडेंट! पहनते हैं जींस पैंट,
घूमते हैं लगाकर सेंट, क्लास में रहते हैं एबसेंट, सिनेमा में रहते हैं प्रजेंट |
आजकल के स्टूडेंट, नहीं करते हैं शिक्षकों का सम्मान,
निडर होकर करते हैं उनका अपमान ||
करते हैं स्कूल में दादागिरी, लगनी चाहिए इनके हाथों में हथकड़ी, देखते हैं टीवी में आमिर खान, फिर भी नहीं आता है इनको ज्ञान |
इन विद्यार्थियों का कैसे होगा भला, जो शिक्षक को कहते हैं बाहर तो मिल जरा||
आजकल के स्टूडेंट करते हैं सेवन गुटखा, पान, समझते हैं खुदको सलमान खान|
कहाँ सुधरने वाले हैं ये शैतान,
इन विद्यार्थियों को तू ही बचा भगवान||

नाम -शिवांगी डुमाला
कक्षा- आठवीं

## गुरु की महिमा (संकलन)

- गुरु दीपक के समान है, जो खुद जलकर दूसरों को ज्ञान रूपी प्रकाश देता है |
- गुरु वृक्ष की तरह है, जो धूप, गर्मी, सर्दी सहकर दूसरों को शीतल हवा एवं ज्ञान रूपी छाया देता है |
- गुरु ज्ञान रूपी भंडार है, जो दूसरों को ज्ञान देता है | यह भंडार कभी खत्म नहीं होता, यह अमर है |
- गुरु सर्वशक्तिमान है, जो ज्ञान रूपी प्रकाश से समस्त संसार के अज्ञान रूपी अंधकार को मिटा देता है|
- गुरु रत्नों की खान है, गुरु से बड़ा न कोय |
  जो गुरु की पूजा करे, सदा सुखी वह होय ||

नाम -विक्की मीणा
कक्षा-आठवीं

## स्वामी विवेकानंद की संक्षिप्त जीवनी

स्वामी विवेकानंद का जन्म कोलकाता में सोमवार 12 जनवरी 1863 को हुआ था | उनका आश्रम में नाम नरेंद्रनाथ दत्त अथवा नरेंद्र था | पिता का नाम श्रीमान विश्वनाथ दत्त एवं माता का नाम श्रीमती भुनेश्वरी देवी था | नरेंद्रनाथ के पितामह दुर्गाचरण दत्त फारसी तथा संस्कृत के विद्वान थे | उनकी दक्षता कानून में भी थी | श्रीमान विश्वनाथ दत्त कोलकाता हाईकोर्ट में वकालत करते थे | नरेंद्रनाथ के चचेरे भाई का नाम रामचंद्र दत्त था | स्वामी जी की अमेरिका यात्रा 31 मई 1893 को प्रारंभ हुई एवं शिकागो धर्म सम्मेलन का उद्घाटन 11 सितंबर 1893 ई. को हुआ | आर्ट इंस्टिट्यूट का भव्य हॉल लगभग 7000 श्रोता एवं दर्शकों से खचाखच भरा हुआ था | स्वामी जी ने इतने विशाल प्रतिष्ठित जन समुदाय के समक्ष कभी भाषण नहीं दिया था, लेकिन जब भाषण का समय आया तो उन्होंने मन में देवी सरस्वती को प्रणाम किया और इन शब्दों से अमेरिका के उस अतुल जनसमुदाय को संबोधित किया -अमेरिका निवासी भगिनी एवं भ्रातृगण | ऐसा संबोधन तो वहाँ की जनता के लिए बड़ा दिव्य था | उनके संभाषण का इतना जबरदस्त प्रभाव हुआ कि दूसरे ही दिन समाचार पत्रों ने उन्हें उस पूरे धर्म सम्मेलन में सर्वश्रेष्ठ एवं महानतम व्यक्ति कहकर वर्णित किया | उन्होंने अनेक रचनाएँ लिखीं | जिनमें 'राजयोग' एवं 'ज्ञान योग' सर्वश्रेष्ठ हैं | जब उनका अंतिम समय आया तो वे कुछ असाधारण रूप में प्रातः काल से ध्यानमग्न रहे | तीसरे प्रहर स्वामी प्रेमानंद के साथ घूमने गए और उन्हें वैदिक पाठशाला प्रारंभ करने की अपनी योजना बताई | सायंकाल वे अपने कक्ष में चले गए और वहाँ एक घंटा ध्यानस्थ रहे | उसके बाद चुपचाप लेट गए |दो गहरी सांसें ली और चिरशांति में लीन हो गए | इस प्रकार स्वामी जी आज भी केवल भारतवासियों के लिए ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए प्रेरणास्रोत बने हुए हैं |

नाम -मनीषा मीना
कक्षा- ग्यारहवीं

## सपनों की उड़ान (एक संदर्भ )

भारत के महान पुरुष अब्दुल कलाम कहते हैं कि यदि आप सोते हुए सपना देख रहे हो तो वह आपका सच्चा सपना नहीं हो सकता | सच्चा सपना तो वह होता है जो आपके दिलों दिमाग में हमेशा घूमता रहता है | सब लोग अपने-अपने सपनों की पूर्ति के लिए मेहनत करते हैं | यदि किसी के सपनों में जान हो और व्यक्ति जी जान से उसे प्राप्त करने में लग जाए तो उसे एक दिन सफलता जरुर मिल ही जाती है | उसी तरह मेरा भी एक सपना है: देश की सेवा करना तथा सपनों को चरितार्थ करना | अपने सपनों के लिए कुछ भी करने को तैयार हूँ | यदि आप अपने सपनों के पास आकर भी उन्हें प्राप्त नहीं कर पाते हैं तो यह अलग बात हो जाती है, लेकिन जब आप अपने सपनों के लिए अपना सब कुछ कुर्बान करने को तैयार हो जाते हैं तो यह अलग बात होती है | आप ही सोचो कि आप जिंदगी भर यह भार लेकर जी सकते हो कि मैं अपने सपनों की पूर्ति के लिए कुछ भी प्रयास नहीं कर पाया | यह कितना दर्दनाक पल होता है | सभी को अपने सपने पूरे करने का अधिकार होना चाहिए | यदि आवश्यकता पड़ी तो अधिकार प्रदान भी कर देना चाहिए | किसी के सपनों का क्या महत्व होता है? यह तो वही जानता है | सभी को अपने सपनों की उड़ान उड़ने दो | उनके पंखों को विराम मत दो क्योंकि यह आपके लिए कष्ट साध्य हो सकता है|

नाम- कुलदीप मीना
कक्षा- ग्यारहवीं

## अमिट, अविरल और अंतिम शब्द

शब्दों का कभी अंत नहीं होता और ना ही वे कभी अंतिम होते हैं | यहाँ अमिट, अविरल और अंतिम शब्द वे शब्द हैं, जो मेरे जीवन को बनाने में लगे | उन महान व्यक्तित्वों के सम्मान, योगदान एवं कृतज्ञता का वर्णन करेंगे, जिनकी आँखें मुझे बढ़ता हुआ देखना चाहती हैं | जो हाथ मेरे हित में अविरल लगे हुए हैं, वह है मेरे माता-पिता, गुरुजन एवं सच्चे मित्र |

**(1)माता-पिता-:** मैंने भगवान को वास्तविकता में कभी नहीं देखा पर वह हमेशा हमारे साथ रहते हैं, माता पिता के रूप में | पानी अपना संपूर्ण जीवन देकर वृक्ष को बढ़ने में मदद करता है इसलिए शायद लकड़ी को डूबने नहीं देता | हमारे माता-पिता का भी कुछ ऐसा ही सिद्धांत है | वह हमें बनाने में जीवन लगा देते हैं | हमें भी उन्हें हर छोटी बड़ी खुशी देनी ही चाहिए | माता-पिता वे मजदूर होते हैं, जो महान व्यक्तित्व के निर्माण के लिए कच्चा माल तैयार करते हैं |

**(2)गुरुजन-:** वे हमारे जीवन में उस सड़क की तरह होते हैं, जो खुद अपनी जगह स्थिर रहकर हमें मंजिल तक पहुँचाते हैं | वह गुरु ही होता है जो हमें सफलता का रास्ता दिखाता है | उस पर चलना सिखाता है | जब पैर डगमगा जाते हैं तो मजबूती देता है | अत :गुरु वे होते हैं, जो माता-पिता द्वारा तैयार कच्चे माल को योग्य एवं मूल्यवान बनाते हैं |

"I Respect too much my teachers"

**(3) मित्र:** मित्रों का भी हमारे जीवन में बहुत योगदान होता है |अगर मित्र अच्छे हैं तो आप अच्छे होंगे | मित्र साये एवं आईने जैसे होने चाहिए जो न तो बुरे वक्त में पीछा छोड़ें और न ही कभी झूठ बोले | मित्र मितभाषी हो या न हो, पर कटु सत्य बोलने वाला होना चाहिए | दोस्ती न तो खून का रिश्ता है, न रिवाज का रिश्ता है, दोस्ती त्याग का रिश्ता है | बुरी संगति से अकेले बेहतर |

नाम- जितेंद्र सैनी
कक्षा-ग्यारहवीं

## योग एक जीवन दर्शन

"स्वस्थ बच्चे स्वस्थ भारत"

योग एक जीवन दर्शन है, योग आत्मानुशासन है| योग एक जीवन पद्धति है, योग व्याधि मुक्त व समाधियुक्त जीवन की संकल्पना है| योग आत्मोपचार एवं आत्मदर्शन की श्रेष्ठ आध्यात्मिक विद्या है| योग व्यक्तित्व को वामन से विराट बनाने की समग्र रूप से स्वयं को रूपांतरित एवं विकसित करने की आध्यात्मिक विद्या है | योग एक वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति नहीं, अपितु योग का प्रयोग परिणामों पर आधारित एक ऐसा प्रमाण है जो व्याधि को निर्मूल करता है | अतः यह एक शारीरिक रोगों का नहीं बल्कि मानसिक रोगों का भी चिकित्सा शास्त्र है | योग एलोपैथी की तरह कोई लाक्षणिक चिकित्सा नहीं अपितु रोगों के मूल कारण को निर्मूल कर हमें भीतर से स्वस्थता प्रदान करता है | योग को एक व्यायाम की तरह देखना या वर्गविशेष की मात्र पूजा पाठ की एक पद्धति की तरह देखना संकीर्णतापूर्ण अविवेकी दृष्टिकोण है | स्वार्थ, आग्रह अज्ञान एवं अहंकार से ऊपर उठकर योग को हमें एक संपूर्ण विज्ञान की तरह देखना चाहिए | योग की पौराणिक मान्यता है कि इससे अष्टचक्र जागृत होते हैं एवं प्राणायाम के निरंतर अभ्यास से जन्म जन्मांतर के संचित अशुभ संस्कार एवं पाप क्षीण होते हैं|

नाम -चन्द्र प्रकाश मीना
पद -टीजीटी (HE& P)

## आओ करें योग

"एक स्वस्थ जीवन के लिए"

प्राणायाम योग के आठ अंगों में से एक है | प्राणायाम का 'प्राण' हमारी जीवन शक्ति है और 'आयाम' का अर्थ है दिशा देना | प्राणायाम श्वसन प्रणाली को सशक्त करने का सुंदर उपाय है | पूरक, रेचक, कुंभक, आंतरिक कुम्भक एवं बाह्य कुम्भक | ये दोनों हमारे शरीर को दुरुस्त करने की ताकत रखते हैं | प्राणायाम सदा निरोगी रखता है | प्राणायाम के लाभ -: शरीर के सभी अंग पोषित होते हैं | शरीर के सभी अंग ठीक कार्य करने लगते हैं | रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होता है|

नाम -चन्द्र प्रकाश मीना
पद -स्नातक शिक्षक (खेल)

## जीवन में खेल कूद का महत्व

खेल हमारे जीवन का एक अहम् हिस्सा है | खेलों से हमारा शारीरिक एवं मानसिक दोनों ही तरह का विकास का होता है ,खेल हमारे दिमागी विकास में लाभकारी है | खेलों को व्यायाम का सबसे अच्छा साधन माना जाता है | खेल ही हमारे शरीर को हृष्ट-पुष्ट, गतिशील एवं स्फूर्ति प्रदान करने में सहायक होते हैं | एक सफल इंसान के लिए चाहिए कि वह मानसिक तथा शारीरिक रूप से स्वस्थ रहें | मानसिक विकास की शुरुआत हमारे स्कूल के दिनों से होना प्रारंभ हो जाती है |

### खेलों से होने वाले लाभ-:

आजकल की व्यस्त दिनचर्या में खेल ही एकमात्र साधन है, जो मनोरंजन के साथ-साथ हमारे विकास में सहायक है | खेल हमारे शरीर को स्वस्थ एवं तंदुरुस्त बनाए रखते हैं| इससे हमारे नेत्रों की ज्योति बढ़ती है | खेल एक व्यायाम है, जिससे हमारे दिमागी स्तर का विकास होता है, ध्यान केंद्रित करने की शक्ति बढ़ती है | खेलों से शरीर निरोगी रहता है | खेलों से मनुष्य आत्मनिर्भर तथा जीवन में सफलता प्राप्त करता है | खेल जीवन की सफलता का आधार है| खेलकूद शरीर और मन में ताजगी लाते हैं |

नाम -चन्द्र प्रकाश मीना
पद -स्नातक शिक्षक (शारीरिक स्वास्थ्य एवं शिक्षा)

दुनिया की सरताज हो हिन्दी,
हर दिल की आवाज हो हिन्दी |
हिन्दू- मुस्लिम, चाहे हो सिख ईसाई,
हर सुबह का आगाज हो हिन्दी |
(संकलित )

## पहेलियाँ:

- भूरा बदन, रेखाएँ तीन | दाने खाती हाथ से बीन || गिलहरी ||
- एक टोकरी में पाँच सेब है | पाँचों सेबों को पाँच बच्चों में ऐसे बांटो कि सबके पास एक-एक सेब हो और टोकरी में भी एक सेब हो ||

  उत्तर: चार बच्चों को एक-एक सेब दो और पाँचवे बच्चे को सेब टोकरी में रख कर दो |
- ऐसी कौन सी चीज है जो सुबह देखो तो हरी, दोपहर को देखो तो काली, शाम को देखो तो नीली, रात को देखो तो सफेद होती है || बिल्ली की आँखें ||
- एक डिबिया में चालीस चोर, सबका मुँह है काला, पूँछ पकड़कर आग लगाई, जगमग हुआ उजाला || माचिस ||
- आगे पीछे साथ चले लेकिन कभी न हाथ लगे || परछाई ||
- रात को नवमी को चमका करता जैसे चाँदी की एक थाली |

  चोर उचक्के लूट न पावे लौटे हरदम खाली || चाँद ||
- एक बाग में फूल अनेक उन फूलों का राजा एक |

  बगिया में जब राजा आए बगिया में चाँदनी छा जाए || चंद्रमा ||
- रोज मुझे तुम देखते हो साल भर बाद फेंकते हो || कैलेंडर ||
- है तो वह रात की रानी आँख से उसके टपके पानी ||मोमबत्ती ||
- काला घोड़ा सफेद सवारी |

  एक के बाद एक की बारी || रोटी और तवा ||
- कौन सा वह अद्भुत बंदर|

  जो उछले पानी के अंदर || मेंढक ||
- छोटे से सूरदास कपड़े पहने सौ पचास || प्याज ||

नाम- हर्ष शर्मा
कक्षा- सातवीं

## पहेलियाँ:

- गीतों की लड़ियाँ रखीं, दिया सॉग को मंच |

  लोककवि हरियाणा का नाम में जिसके चंद || लक्ष्मीचंद ||
- नाम मेरा है माह का, रिश्ता भी हूँ एक |

  जो मुझको बूझे अभी, उसको समझो नेक || जेठ ||
- बाप और बेटी, माँ और बेटा, बहन और भाई, कितने हुए भाई? || चार ||
- एक को दो मैं बनाऊँ, न पीछे कुछ पीऊँ न कुछ खाऊँ? || दर्पण ||
- स्त्री भरपेट खा गई सारा खेत || दीमक ||

नाम- नंदिनी
कक्षा - सातवीं

## वीरांगना रानी दुर्गावती का शौर्य

रानी दुर्गावती कालिंजर के राजा कीर्तिराम की पुत्री थी | जिसे उन्होंने पुत्र के समान ही पाला था | उसने शस्त्र चलाने की शिक्षा बचपन से ही पाई थी| तेरह चौदह वर्ष की आयु में ही सिंह, तेंदुआ आदि भयंकर वन जंतुओं का शिकार करना उसकी आदत थी | कीर्ति राम ने दलपति के शौर्य एवं सज्जनता को देखकर उनकी याचना पर दुर्गावती का विवाह उनके साथ कर दिया | पति के स्वर्गोपरांत अपने वीर पुत्र नारायण को गढ़मंडल की राजगद्दी पर बैठाकर स्वयं संरक्षिका के रूप में व्यवस्था में संलग्न रही| घर के भेदियों के कारण शत्रु के आगे बढ़ने पर वह वीरांगना अपने पूर्वजों की भूमि गढ़मंडल की रक्षार्थ डटी रही और मुगल सेना के छक्के छुड़ा दिए | आसफ खाँ को पराजय का मुँह देखना पड़ा और वह बड़े तोपखाने के साथ दूसरी बार भी सफल न होने पर तीसरी बार आक्रमण कर गढ़मंडल पर अपना आधिपत्य जमाने में विश्वासघातियों की करतूतों के कारण सफल हुआ| पुत्र वीर नारायण के वीरगति को प्राप्त होने एवं तोपों की मार से किले की दीवार ढह जाने से रानी की सेना ने बहादुरी के साथ लड़ते लड़ते वीरगति पाई | पर विश्वासघाती आधार सिंह से अंतिम क्षण रानी ने भरे हुए कंठ से कहा- मैं असमर्थ हूँ, मेरा हाथ आप पर नहीं उठ सकता | घायल रानी जोश में आ गई और मरते-मरते उठकर बैठ गई और अपनी कटार जोर से अपनी छाती में भोंक ली | शत्रु को केवल उसकी निर्जीव लाश ही हाथ लगी | नगर में मुगल सेना ने घुसकर गढ़मंडल के खजाने व संपत्ति को मारकाट मचाते हुए लूट लिया | आसफ़ खाँ ने भी बहुत सा सोना, चांदी, जवाहरात आदि लूटा | थोड़ा सा भाग दिल्ली बादशाह को भेजा | इस प्रकार गढ़मंडल का दीपक बुझ गया| रानी दुर्गावती ने मातृभूमि की रक्षा के लिए अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की और भारतीयता की रक्षा और स्वाधीनता के लिए अपना बलिदान करने वाली वीरांगना अमर हो गई|

नाम- सानिया मेहता

कक्षा - नौवीं

## हँसी-मजाक/ चुटकुले

1. मैम- बच्चों ! बताओ? पृथ्वी के सबसे पास कौन सा ग्रह है?

   बच्चे- सोच में पड़ जाते हैं|

   मैम- बच्चों! जल्दी बताओ|

   बच्चे- बता तो रहे हैं मर क्यों रही है|

   मैम- बिल्कुल सही जवाब || मरकरी ||

2. एक दिन दो लड़कियाँ अपने गाँव आई थीं, फिर वे दोनों दूध पीते हुए बात करने लगी | एक का नाम था रिया और दूसरी का नाम था प्राची |

   रिया बोली- सुना है कि गाय का दूध पीने से शक्ति और दिमाग बढ़ता है |

   प्राची बोली- अगर ऐसा होता तो गाय का बछड़ा अब तक वैज्ञानिक बन जाता|

नाम - प्रियांशी

कक्षा - पाँचवी

# परीक्षाओं के दिन

विद्यार्थी परीक्षा के भूत से काफी घबराते हैं, लेकिन यह बात नहीं है | बहुत सारे विद्यार्थी ऐसे भी होते हैं, जो परीक्षाओं से बिल्कुल नहीं डरते | इसका एक ही कारण है कि वे विद्यार्थी एकदम ठीक तरह से परीक्षा की तैयारी करके आते हैं तथा उनसे पेपर में कुछ भी पूछ लो वे तैयार होते हैं क्योंकि इसका एक ही अर्थ है कि उन विद्यार्थियों ने पहले से ही बहुत मेहनत की है | इसलिए अब उनकी मेहनत का फल मिल रहा है| इसके अलावा जो लोग परीक्षाओं से घबराते हैं उनका सिर्फ यही काम है कि वह पहले तो पढ़ाई पर ध्यान नहीं देते और शुरू के दिन वे हँसी-मजाक में निकाल देते हैं | बाद में जब परीक्षाओं के दिन नजदीक आते हैं तो वह पढ़ाई शुरू करते हैं |

इस प्रकार वे जो भी पढ़ते हैं उन्हें समझ में नहीं आता है और वे कैसे न कैसे करके पूरी तैयारी करने का पूरा प्रयास करते हैं, लेकिन जब वे परीक्षा के दिन परीक्षा में बैठते हैं तो सारा पढ़ा हुआ घुल-मिल जाता है और पेपर में कुछ नहीं लिख पाते हैं | जिससे उनके कम अंक आते हैं या फेल हो जाते हैं | इसलिए हमें जो काम मिलता है, उसे उसी समय करना चाहिए ताकि बाद में हमें कोई परेशानी न आए तथा हमें शिक्षक के साथ-साथ चलना चाहिए, जिससे कि हम पीछे नहीं छूटे और साथ-साथ पढ़ाई में ज़ोरदार मेहनत करनी चाहिए ताकि हम भविष्य में अच्छा कर सकें | सचमुच परीक्षाओं के दिन ऐसे दिन होते हैं, जब अच्छे-अच्छे लोगों के पसीने छूट जाते हैं | लेकिन हमें अपने ऊपर विश्वास रखना चाहिए | साथ ही साथ जीवन में दो लोगों की अवश्य सुनो, माता-पिता एवं शिक्षक की क्योंकि वे हमारे सबसे अच्छे मित्र होते हैं और जो व्यक्ति ठान ले कि मुझे कार्य करना है वह उस कार्य में अवश्य सफल होता है |

इसलिए हमें हमारे मन में विश्वास रखना चाहिए जिससे कि हमारे सारे कार्य सफल होते चले जाएँ | जब हमें विद्यालय में किसी विषय में कुछ न कुछ समझ में न आता हो तो बार-बार अभ्यास करने पर वह समझ में आ जाता है, इसके लिए हमें कड़ी मेहनत करनी पड़ती है | जो व्यक्ति मेहनत करता है, वही व्यक्ति जीवन में सफल होता है | अत :हम सबको जीवन मेन कड़ी से कड़ी मेहनत करनी चाहिए|

नाम- बनवीर मेहता

कक्षा - बारहवीं

## समय का मूल्य

समय के समान इस दुनिया में और कोई वस्तु मूल्यवान नहीं है | हमें समय को बरबाद नहीं करना चाहिए | जीवन छोटा है, जितना अच्छा हो सके हमें करने का प्रयास करना चाहिए | यदि तुम समय को बरबाद करोगे तो समय तुम्हें ही बरबाद कर देगा | एक बार जो समय चला जाता है वह सदैव के लिए चला जाता है | किसी ने सही कहा है कि हम धन को खर्च करने के बाद उसे पुनः प्राप्त कर सकते हैं तथा और कमा सकते हैं, लेकिन एक बार जो समय खो दिया या बरबाद कर दिया जाता है वह कभी लौटकर नहीं आता है | समय की गति ऐसी है कि जैसे ही एक सेकंड व्यतीत हो जाता है तो वह सेकंड वर्तमान से भूतकाल में चला जाता है | यदि तुमने उस सेकंड का जो कि वर्तमान में था, उचित उपयोग नहीं किया है तो वह सेकंड बरबाद हो जाएगा | वह नष्ट हो जाएगा और भूतकाल बन जाएगा | कितने ही प्रयास अथवा व्याकुलता उस भूतकाल को वापस नहीं ला सकेगी | वह समय ही है जो बालक को जन्म देता है, उसे युवा और वृद्ध बनाता है | वह समय ही है जो उसे मृत्यु तक पहुँचता है, लेकिन आज हमारे समाज में ऐसे कई सारे लोग हैं जो समय का उपयोग ठीक से नहीं करते हैं तथा समय को कई सारे बेकार कामों में बरबाद करते हैं | लेकिन ऐसा भी नहीं है कि सारे लोग समय को बरबाद कर रहे हैं | आज भी ऐसे लोग हैं जो एक-एक सेकेंड का उपयोग कर देश को आगे बढ़ा रहे हैं | देश को और पावरफुल बना रहे हैं तथा हमें यही आशा है कि हम तथा आप समय का पूरा उपयोग करेंगे एवं उसे अपने काम में लगाएँगे | जिससे कि हमें भविष्य में समय की कमी न हो तथा समय बरबाद न हो | समय बहुत मूल्यवान है उसे बरबाद होने से बचाएँ |

नाम- राधेमोहन लोधा

कक्षा- बारहवीं

## शेर और नन्हीं चुहिया

एक बार की बात है | जंगल का राजा शेर सो रहा था, तभी एक शरारती चुहिया को अजीब सा खेल सूझा | वह उसके पेट पर जोर-जोर से उछलने लगी | शेर को गुदगुदी हुई, तो उसकी नींद खुल गई | चुहिया को देखकर शेर ने हंसते हुए कहा -'तेरी इतनी हिम्मत कैसे हुई कि मेरे ऊपर उछल कूद करें |' अब तो चुहिया की हालत देखने लायक थी, थरथर काँपते हुए उसने कहा -'शेर राजा मुझे माफ कर दीजिए | जब कभी आप संकट में होंगे तो मैं भी आपके किसी काम आऊँगी |' शेर को यह बड़ा अजीब लगा कि भला यह चुहिया मेरे किस काम आ सकती है? पर फिर भी उसने हँसते हुए उसे छोड़ दिया | कुछ समय बाद की बात है, शेर जंगल में घूम रहा था | तभी शिकारियों के जाल में फँस गया | उसे लग रहा था कि अब तो मरना ही होगा | जैसे ही चिड़िया ने उसे जाल में फँसा हुआ देखा, वह वहाँ दौड़कर आई और जाल काट दिया | अब शेर आजाद था | उसने प्यार से कहा- धन्यवाद ! चुहिया आज तुमने मेरी जान बचाई है | मैं इसे कभी नहीं भूलूंगा |

शिक्षा: व्यक्ति या कोई प्राणी विशेष कितना ही छोटा क्यों न हो उसका भी अपना महत्त्व होता है|

नाम- तनुष्का

कक्षा- सातवीं

## अनमोल वचन

यदि आप कोशिश करते हो और कुछ भी हासिल नहीं होता है, तो उसमें आपकी कोई गलती नहीं है |

लेकिन यदि आप जरा भी कोशिश नहीं करते हो और हार जाते हैं तो उसमें पूरी आपकी गलती है ||

अच्छा कर्म करते रहो, चाहे कोई सम्मान करें या न करें |

क्योंकि सूर्य जब उदय होता है, तब करोड़ों लोग नींद में होते हैं, फिर भी सूर्योदय होता है ||

बुद्धिमान वे हैं, जो बोलने से पहले सोचते हैं |

मूर्ख वे हैं जो बोलते पहले और सोचते बाद में हैं ||

इंतजार मत करो, जितना तुम सोचते हो जिंदगी उससे कहीं ज्यादा तेजी से निकल रही है,

मेहनत वह सुनहरी चाबी है, जो बंद भविष्य के दरवाजे खोल देती है |

सिक्के हमेशा आवाज करते हैं, मगर नोट हमेशा खामोश रहते हैं, इसलिए जब आप की कीमत बढ़े तो शांत रहिए|

अपनी हैसियत का शोर मचाने का जिम्मा आप से कम कीमत वालों के लिए है ||

माँ और क्षमा, दोनों एक है, क्योंकि माफ करने में दोनों नेक है

नाम- डोली शक्तावत

कक्षा- दसवीं

## समर्पण (कविता)

कुएँ में उतरने वाली बाल्टी यदि झुकती है ,
तो कुछ भरकर बाहर आती है |
जीवन का भी यही गणित है ,
जो झुकता है वह प्राप्त करता है ||
जीवन में किसी का भला करोगे तो भला होगा ,
क्योंकि भला का उल्टा लाभ होता है |
जीवन में किसी पर दया करोगे तो वह याद करेगा ,
क्योंकि दया का उल्टा याद होता है ||
भरी जेब ने दुनियाँ की पहचान कराई ,
खाली जेब ने इंसानों की ,
जब लगे पैसे कमाने, तो समझ आया ,
शौक तो माँ बाप के पैसों से पूरे होते थे ,
अपने पैसों से तो सिर्फ जरूरतें पूरी होती हैं ||
किनारे पर तैरने वाली लाश को देखकर समझ आया,
कि वह वजन शरीर का नहीं साँसों का था |
सर झुकाने से नमाज अदा नहीं होती ,
दिल झुकाना पड़ता है इबादत के लिए |
सपने देखने से मिलता नहीं कुछ ,
मेहनत करने से जिंदगी का मुकाम हासिल होता है||
पहले मैं होशियार थी, इसलिए दुनिया बदलने चली थी,
अब मैं समझदार हूँ, इसलिए खुद को बदल रही हूँ |
बैठ जाती हूँ मिट्टी पर अकसर,
क्योंकि मुझे अपनी औकात पसंद है ,
मैंने नदी से सीखा है जीने का सलीका ,
कल-कल बहना और अपनी मौज में रहना ||
प्रेम चाहिए तो समर्पण खर्च करना होगा ,
विश्वास चाहिए तो निष्ठा खर्च करनी होगी ,
साथ चाहिए तो समय खर्च करना होगा ||
किसने कहा रिश्ते मुफ्त में मिलते हैं ,
मुफ्त में तो हवा भी नहीं मिलती ,
एक साँस भी तब आती है ,
जब एक साँस छोड़ी जाती है ||

नाम- मानसी मीना

कक्षा- बारहवीं

## घुटन (संकलित - शमशुल हक़)

काश मेरा कोई दर्द समझता, मैं कैसी उलझन में हूँ,
सब कुछ होने के बाद भी मैं कैसी घुटन में हूँ |
कैसे समझाऊँ अपनी बात कोई समझना चाहता नहीं,
अब ताकत काम आती नहीं, क्योंकि वह समय निकल गया,
सब कुछ बदल गया है अब, आदमी भी वह न रह गया |
सब अपनी मर्जी का चाल चल रहे हैं, क्यों हम अपना दुखड़ा दूसरों से कह रहे हैं?
समझ में आता नहीं यह सब क्यों हो रहा है ?
हाथों से ये डोर धीरे- धीरे सरक रही है |

काश यह अच्छे हाथों में जाता तो गम नहीं होता,
कम से कम जो हमने कमाया कम न होता |
जिन्दगी भर का कमाया दूसरों के हाथ में जा रहा है,
इसके अच्छे आसार नहीं दिखते इसलिए मन पछता रहा है |
लेकिन सबकुछ जानने के बाद भी यह सब कुछ हो रहा है,
जुबान खुलती नहीं मन रो रहा है |

अगर जुबान खोलता हूँ, तो हंगामा हो जाता है,
दिल के टुकड़े - टुकड़े हो जाते हैं, मन बार-बार पछताता है ,
“अब तो जो होना है, हो के रहेगा “
शायद यही है कुदरत का फैसला, अब आना है अंजाम,
कोई कितना भी कोशिश कर ले बदल नहीं सकता इंसान |

एक दिन इसी तरह सबको पछताना है ,
कुछ अच्छे काम भी कर लो , लौट के घर जाना है
लौट के घर जाना है .....

ओम प्रकाश
स्नात्तकोतर शिक्षक

## कब क्या नही खावें (संकलित)

कार्तिक दूध अगहन में आलू |
पूष पान और माघ रतालू ||
फागुन शक्कर घी जो खावे |
चैत्र आँवला कच्चा खावे ||
बैसाख जो खाय करेला |
जेठे दाख आषाढ़ केला ||
सावन निशि में जब तब खाय |
भादों ब्यार कबहिं नहीं खाय ||
कबार कामना देय बचाय |
तो शत वर्ष आयु हो जाये ||

ओम प्रकाश
स्नात्तकोतर शिक्षक

# शिक्षक का परिचय

मत पूछिए कि शिक्षक कौन है?
आपके प्रश्न का सटीक उत्तर
आपका मौन है|
शिक्षक न पद है, न पेशा है,
न व्यवसाय है|
न ही गृहस्थी चलाने वाली
कोई आय है||
शिक्षक सभी धर्मों से ऊँचा धर्म है|
गीता में उपदेशित
"मा फलेषु" वाला कर्म है ||

शिक्षक एक प्रवाह है|
कभी मंजिल नहीं रहा है||
शिक्षक पवित्र है |
महक फैलाने वाला इत्र है
शिक्षक स्वयं जिज्ञासा है |
खुद कुआं है पर प्यासा है ||

वह डालता है चाँद सितारों,
तक को तुम्हारी झोली में |
वह बोलता है बिलकुल,
तुम्हारी बोली में||
वह कभी मित्र,
कभी माँ, तो
कभी पिता का हाथ है|
साथ न रहते हुए भी,
ताउम्र का साथ है||

वह नायक ,खलनायक,
तो कभी विदूषक बन जाता है |
तुम्हारे लिए न जाने,
कितने मुखौटे लगाता है ||

इतने मुखौटों के बाद भी ,
वह समभाव है||
क्योंकि यही तो उसका
सहज स्वभाव है ||
शिक्षक कबीर के गोविंद सा
बहुत ऊँचा है|

कहो भला कौन
उस तक पहुँचा है ||
वह न वृक्ष है,
न पत्तियाँ है,
न फल है|
वह केवल खाद है|
वह खाद बनकर ,
हजारों को पनपाता है|
और खुद मिट कर,
उन सब में लहराता है||

शिक्षक एक विचार है|
दर्पण है संस्कार है |

शिक्षक न दीपक है, न बाती है,
न रोशनी है|

वह स्निग्ध तेल है|
क्योंकि उसी पर,
दीपक का सारा खेल है||

शिक्षक तुम हो, तुम्हारे भीतर की
प्रत्येक अभिव्यक्ति है|
कैसे कह सकते हो,
कि वह केवल एक व्यक्ति है||

शिक्षक चाणक्य, सान्दिपनी
तो कभी विश्वामित्र है|
गुरु और शिष्य की
प्रवाही परंपरा का चित्र है||

शिक्षक भाषा का मर्म है|
अपने शिष्यों के लिए धर्म है||

साक्षी और साक्ष्य है|
चिर अन्वेषित लक्ष्य है||
शिक्षक अनुभूत सत्य है|
स्वयं एक तथ्य है||

संकलित श्री संदेश खत्री
कार्यानुभव शिक्षक

## How global warming is heating up America and how we can keep ourselves cool

Global warming is occurring nationwide and the results are being faced by the Americans because the Ozone Layer is thinning due to toxic air pollution produced by humans.We are suffering the consequences of that behaviour.Climate changes and the warming of the earth has been felt over the past decade in all of the states of America. What can you do to fight the heat during the hottest months?It will discuss how to save money by using Louisville air conditioning repair and loss with their conditioning service to maintain your HVAC system as well as preparing your home to stay cooler from better insulation.

The warming trend has been a concern over the years and has been felt not only in the traditionally warmer climates like the south and South Western States but also in the cold climate like Alaska and Vermont.One example is of Vermonters that have lived in their green mountain state for 25 or more years. Yearsago air conditioning and even fan was typically not needed during the summer months as the highest temperature usually was in the upper seventies now it is not uncommon to have hot humid days that were will into the 90s requiring some form of cooling for these Old Farm Houses.Even as early as 15 years ago new construction never included central air conditioning because it's simply was not necessary and now that is no longer the case.

By Priyanka Meena class 11th

## GEOMETRICAL WEDDING INVITATION

X Y Z square number 3. 8

protractor 213

Dear Triangle

Yesterday, I received a circular card from your brother parallelogram. How is aunt trapezium, my brother rectangle is getting married to quadrilateral. So you are cordially invited to dinner at 8: 00 p. M. On 12th May hope you will come along with trapezium, parallelogram, cylinder, circle and their children: Line, diameter, chord and radius. We have also arranged a hexagonal Bond to celebrate the occasion. Please do come and grace the occasion.

Yours loving Rhombus

By Dolly shaktawat class 10

## Body managers

President-Mr. Heart
Prime Minister -Miss Brain
home minister -kidney
Information Technology-Mr. Tongue
social welfare-Mr. Hand
supply Minister-Mr. Artery and Vein
law and Justice-Mrs. Eyes
Railway-Mr. Vessels
Commerce and corporation –Mr. Pituitary
Finance minister- Liver
External affairs minister - lungs
Petroleum and chemical-Mr. Pancreas
Communication-Mrs. Ear and Mrs. Tongue
Health Minister – Intestines

Deepak Kumar
class 10th

## I got but lost

I got a new morning but before I lost in evening
I got a day as borrow
but I lost it as waste so I have a sorrow
I got a new school as persons but for them lost my emotions
I got youth but I lost my childhood they were my Golden days
I got some bad as well as I lost some good now I want reason for smile seriousness comes with end of funny life
in childhood I could laugh without reason that was my spring season
I got a sharpness But lost my Innocence
I got experience by losing my appearance
life means so many ups and downs one who cross them do get a super Crown

By RamkrishnaAhir
Class 12th

## Health tips

An apple a day= no doctor
one lemon a day =no fats
3 litres of water per day =no diseases
oneTulsi leaf a day =no cancer
1 cup milk a day= no bone

## An ideal student

An ideal student means an excellent or perfect student.There are many students who study in the school, but only a few are ideal.It is an old man saying that school is the temple where students go for worship.It is called the temple of goddess Saraswati i.e. knowledge.In schools, there are many types of children some are lazy some are very good in games and some are very good at studies too.There are many ideal students in our school Kendriya Vidyalaya ctpp Chhabra due to qualities they possess.The qualities that make a student ideal are as follows|: they try their best to keep themselves at the top position, behaving as per the expectations of the teachers and parents.Ideal students believe in “early to bed and early to rise makes a man healthy wealthy and wise”.An ideal student takes a balance diet and takes exercise timely to keep himself fit and fine, an ideal student is always regular to school, follows rules and regulations of the school and regards the teachers wholeheartedly and submit the given work timely after the completion as well as participates in all activities organised by the school.He believes that learning is the process of progressive behaviour and keeps on learning the entire time.An ideal student believes in the philosophy of Abraham Lincoln that “it is far more honourable to fail than to cheat”.Due to above philosophy an ideal student leads a true life and always speaks the truth.An ideal student has faith in labour, he or she remains helpful to all keeping one thing in mind that there is no work as the work done for others. An ideal student always utilizes his leisure time in a fruitful way such as attending libraries,Consulting dictionaries for clearing the doubts, reading GK books to invest one's personality, playing games of interest that can keep mind and body healthy. The most important quality of an ideal student is to keep your head on the path of success.Because of the aforesaid qualities an ideal student is the star of everyone's eyes and regarded in the school and in the society too.Such a student brings glory to ourselves, community and country at large.One should try one's level best to become an ideal student in the school to achieve the desired goal of one's life.

By: Mr Mukesh Meena

Principal

## When you have nothing better to do, just try answers for these!

1. If poison expires, is it more poisonous or is it no longer poisonous?
2. Which letter is silent in the word "Scent," the S or the C?
3. Why is the letter W, in English, called double U? Shouldn't it be called double V?
4. Maybe oxygen is slowly killing you and It just takes 75-100 years to fully work.
5. Every time you clean something, you just make something else dirty.
6. The word "swims" upside-down is still "swims".
7. 100 years ago everyone owned a horse and only the rich had cars. Today everyone has cars and only the rich own horses.
8. If you replace "W" with "T" in "What, Where and When", you get the answer to each of them.

By- Tanishka mahawar

class-VIIIth

## Crucial role of mobile phones

Information Technology has brought a Cultural Revolution. The mobile phone is another milestone in second revolution. It has become a modern necessity; it plays a crucial role in promoting business and economy. Actually it has become a mixed blessing. The mobile phone has become a key in the hands of young and old alike. The findings of police tells different stories the facts are quite revealing, the danger posed by the mobile phone while travelling and driving is quite real. It has resulted in careless driving causing many avoidable accidents. Certainly the mobile phone demands more judicious use. We are living in the rapidly changing world, speed and efficiency are the watch words of today. These are from and correct information means quick money. In stock exchanges the rates of share changes every minute, lack of information or delay can cause huge losses. Similarly our relatives and friends can contact us whenever and wherever we are. A mobile phone has become a great source of entertainment; songs, films, music and much more can be enjoyed with them but mobile phone has become a great nuisance-crimes, gangsters, bombs are increasing to higher graphs due to mobile phones. We must use our Seventh Sense while using it.

By Jitendra Saini class 11th

## LETTERS TO GOD!!

God is the ultimate refuge to all of us. We may forget God in good times and remember him in our bad times but he is always there to love us and guide us. Student of our Vidyalaya sent their feelings to God when I taught a lesson "A letter to God" here are some of their feelings in words-

* I miss you God Please come back to earth
* Thank you God for you giving me all the facilities.
*God, I am thankful because you have given me all i.e. the best family, a cute mother, brother and a lovely father.
*God, I am bad in something and good in some others, sometimes I lie, I scold others please help me.
*Shri Krishna, how are you? Where is Radha Ji your parents well?
*Dear God Shiv ji, Parvatiji, Vishnu ji, Lakshmi ji please come to my birthday I am send you invitation card with letter
* Dear God I am so sad because you gave us so many things and people are destroying them nature, trees, water.
*God I don't want anything but give the needy people everything they want
* Hanuman Ji, you served Lord Rama and Sugriv I also want to serve my parents
*God I wish you always travel with me and keep me safe and never go away
*Dear God, yesterday I saw your idol in a temple I want to meet you alone I want a true friend. Please meet me I feel lonely
*Dear God all are selfish because they imagine God is in stones and not in people. No one can solve my problem but only you

These letters show that our students need love and care. I pray to the almighty that he may show us the path which he wants us to tread.

By Mr D P Dinesh
TGT English

## DRUG ABUSE AND ITS HARMFUL EFFECTS

Drug abuse is the repeated and excessive use of drugs.It impacts a person's mental as well as Physical health negatively causing a major damage to the Brain. It is difficult to recover from this problem and even those who do stand ahigh risk of developing it again. People usually take to drug abuse in order to curb the stress caused due to the following family issues, pressure of work relationship problems, financial issues etc.It's a complex disease that needs long term intensive treatment just like any other chronic condition.

By-Prachi Parwani
class 8

## Every single child is gifted

Every single child is gifted. And every child has challenges. It's just that in the educational system, some gifts and challenges are harder to see. And lots of teachers are working on this. Lots of schools are trying to find ways to make all children's gifts visible and celebrated.And as parents, we can help. We can help our kids who struggle in school believe that they're okay. It's just that there's only one way to help them. And it's hard.

We have to actually believe that our kids are okay.

I know, it's tough. But we can do it. We can start believing by erasing the idea that education is a race. It's not. Actually, education is like Christmas. We're all just opening our gifts, one at a time. And it is a fact that each and every child has a bright shiny present with her name on it, waiting there underneath the tree. God wrapped it up, and He'll let us know when it's time to unwrap it. In the meantime, we must believe that our children are okay. Every last one of them. The perfect ones and the naughty ones and the chunky ones and the shy ones and the loud ones and the so far behind ones and the ones with autism.

Because here's what I believe. I think a child can survive a teacher or other children accidentally suggesting that he's not okay. As long as when he comes home, he looks at his mama and knows by her face that he really is. Because that's all they're asking, isn't it?

Mama, Am I Okay?

In the end, children will call the rest of the world liars and believe US.

So when they ask us with their eyes and hearts if they're okay. . . let's tell them:

Yes, baby. You are okay. You are more than okay. You are my dream come true. You are everything I've ever wanted, and I wouldn't trade one you for a million anybody elses.

By- Narmada Jakhar

PGT ENGLISH

## Four great confusions still unresolved

1. At a movie theatre, which arm rest is yours?
2. If people evolve from monkeys, why are monkeys still around?
3. Why is there a 'D' in fridge, but not in refrigerator?
4. Who knew what time it was when the first clock was made?

By: Abhishek Mahawar Class-XII

## The true life inspiring story

In 1938 there was a man in Hungarian Army named Karolay, who was the best pistol Shooter of his country. He won most of the major National and international championships. He seemed closest to winning 1940 Tokyo Olympic gold medal and that was his dream for which he had practice for years. He wanted his hand to be the best shooting hand in the world but all the dreams turn to dust when one day in 1938 in a training camp. He lost his right hand, the shooting hand, that accident ended up his Olympic dream as well as the only goal of his life. He had two ways, he would have chosen to kneel down to life and cry for the rest of life or focus back on his dreams with small light of hope. After one year in 1939 Karolay went to a national shooting Championship. His colleagues delighted to see him and complemented on his courage to come up at the Championship to share them but Karolay answered he was not there to share them but to compete them. With his only hand he had practiced for complete one year with his left hand to become the best shooter and he want that Championship. He focussed on what he had not on what he has lost but he didn't stop there. His Focus was to become the best shooting hand of the world, he practiced for the Olympic held in 1940 but they cancelled due to world war against practice for the next Olympic in 1944 but they are also cancelled due to the world war but in 1948 he compete with the new young shooters when he was 48 years old but he won the Olympic in 1948 to 1952.If you are determined nothing can stop you from achieving your goal.

By Abhishek Mahawar class 12

There was once a king of Cyrus whose name was Hiero.The country over which he ruled was quite small but for that very reason he wanted to wear the biggest crown in the world.So he called a famous goldsmith who was skillful in all kinds of fine work and gave him 10 pounds of pure gold.Take this, he said, and fashion it into a Crown that shall make every other King want it for his own.Be sure that you put into it every grain of the gold I gave you and do not mix any other metal with that.

It shall be as you wish,said the goldsmith.Here I received from you 10 pounds of pure gold, within 90 days return to the finish crownwhich shall be of exactly the same weight. 90 days later true to his word, the goldsmith brought the Crown.It was a beautiful piece of work and all who saw it said that it had not its equal in this world.When King Heiro put it on his head it felt very uncomfortable but he did not mind that he was sure that no other King had so fine headpiece.After he had admired it from this side and from that he weighed it on his own scales, it was exactly as heavy as he had ordered. You deserve great praise he said to the goldsmith, you have wrought very skillfully and you have not lost a grain of my gold.

There was in the king's Court a very wise man whose name was Archimedes. When he was called in to admire the kings Crown he turned it over many times and examine it very closely.Well what do you think of it askedHeiro, the workmanship is indeed very beautiful, answered Archimedes but the gold, the gold is all there said the King, I weighed it on my own scales, but it does not appear to have the same rich red colour that it had in the lump, it is not red at all, but a brilliant yellow as you can plainly see.Most gold is yellow sad the King, but now that you speak of it I do remember that when this was in the lump, it had much richer colour.What if the gold Smith has kept out a pound or two of gold and made up the weight by adding brass or silver,asked Archimedes.

He could not do that said Heiro, the gold has merely changed its colour in the working but the more he thought of the matter the less pleased with the crown.At last he said to Archimedes,“is there any way to find out whether that goldsmith has really cheated me or whether he honestly give me back my gold”.

“I know no of no way” was the answer but Archimedes was not the man to say that.Anything was impossible He took great delight in working out hard problems and when any question puzzles him he would keep studying until he found some sort of answer to it, and so day after day he thought about the gold and tried to find some way by which it could be tested without doing harm to the Crown.One morning he was thinking of this question while he was getting ready for the bath, the great tub was full to the very edge and as he stepped into it, a quantity of water flowed out upon the stone floor.A similar thing had happened a hundred times before but this was the first time that Archimedes had thought about it.

How much water is displaced by getting himselfinto the tub, as anybody can see that It displaces the bulk of water equal to the bulk of my body, a man half my size would displace half as much.Now suppose instead of putting myself into the tub I had put Heiro's Crown into it,it would have displaced a bulk of water equal to its own bulk.Let me see gold is much heavier than silver in pounds of pure gold will not make so great a bulk as say seven pounds of gold mixed with 3 pounds of silver arrows ground is pure gold, it will displace the same bulk of water as any other 10 pounds of pure gold but if it is part Golden part silver it will displace a larger bulk. I have it at last!! Eureka!! Eureka!!! forgetful of everything else he leave from the bath without stopping to dress himself, he ran through the streets to the king's Palace shouting Eureka! Eureka! Eureka!which in English means "I have found! I have found it! I have found!.The crown was tested, it was found to displace much more water than 10 pounds of pure gold displaced.The guilt of the goldsmith was proved beyond doubt, but whether he should be punished or not, I do not know neither does it matter.

The simple discovery which Archimedes made in his bathtub was worth far more to the world then Heiroscrown.Can you tell why??

By: Samantha Mukharjee
Class: VIII

## An ideal teacher

T-Talented
E- Emotional
A-Affectionate
C- Caring
H-Honorable
E-Eenergetic
R- Respected

Who is the teacher? Teachers are our second parents. Teachers are the people who know what is good and bad for students. In my opinion the ideal teacher should have good nature that is feeling to understand the students. They should know why a particular child is not good in studies? What is the problem? They should not be very strict because students hesitate in talking to them and asking them questions. They should not be partial with students and should give more attention to those students who are weak. One who feels all students are my children is an ideal teacher, one who is always ready to solve the problems related to the subjects is an ideal teacher. A good teacher is a master of his subject and is able to answer any question the students ask, he does not shout when students give wrong answers, they should not only to close to children in school but when they are out of the school. Then teacher should not think that it is not their duty but they should scold and stop the students from wrong doing things. They should point out what is right and wrong out of the school too.

By: Mr Mukesh Meena
Principal

## Vagaries of English Language! Enjoy!!!

- Wonder why the word funeral starts with FUN?

- Why isn't a Fireman called a Water-man?

- How come Lipstick doesn't do what it says?

- If money doesn't grow on trees, how come Banks have Branches?

- If a Vegetarian eats vegetables, what does a Humanitarian eat?

- How do you get off a non-stop Flight?

- Why are goods sent by ship called CARGO and those sent by truck SHIPMENT?

- Why do we put cups in the dishwasher and the dishes in the Cupboard?

- Why do doctors 'practice' medicine? Are they having practice at the cost of the patients?

- Why is it called 'Rush Hour' when traffic moves at its slowest then?

- How come Noses run and Feet smell?

- Why do they call it a TV 'set' when there is only one?

- What are you vacating when you go on a vacation?

We can never find the answers, can we?

So just enjoy the pun and fun of the English language!!

By Narmada jakhar PGT(Eng)

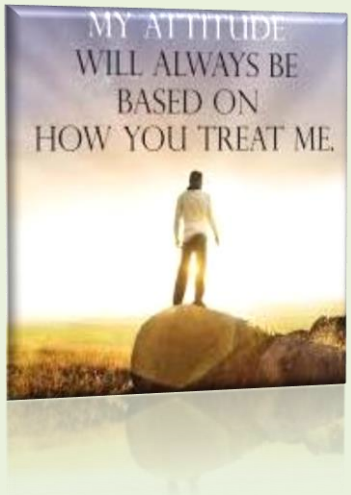

# पितृदेवो भव:

संसारे 'मातृदेवो भव' इति भावना सर्वत्र वर्तते | परंतु 'पितृदेवो भव' इति भावना यदा-कदा दृश्यते |मातु: महत्ता सर्वत्र श्रूयते परं पितु: महत्त्वं क: अपि न जानाति | एकस्य बालकस्य जीवने पितु: महत्त्वं अति महत्त्वपूर्णम् | पिता पुत्राय ईश्वरेण दत्त: सर्वोत्तमा कृति: अस्ति | माता जननी पिता तु जनक: अस्ति | पित्रा विना मातु: जीवनमपि अपूर्णमस्ति | स: दिन रात्रौ परिश्रम्य बाल्यात् स्वपुत्राय ध्यानं ददाति | स: सुसंस्कारेण स्वानुभवेन निजबालकाय सुशिक्षां प्रदानं करोति | माता केवलं जन्म ददाति अपितु पिता जीवने परिवारसुखाय बहूनि कष्टानि स्वीकरोति | कदापि स्वकुटुंबं दुखितं द्रष्टुम् न इच्छति | हे प्रिय पुत्र ! पुत्रि! कदापि जीवने स्वपितु: उपकारं न विस्मरेयु: | यत: भवतां सफलतायाः पृष्ठे पितु: वरदहस्तमस्ति | वयं तं प्रति कृतज्ञताम् अनुभवाम: |

नाम- चेतना नागर
कक्षा –आठवीं

# सर्वदा साधुवृत्तिम् आचरेत्

सुकर्मणा हि सिध्यन्ति कार्याणि न उपदेशे: इति सम्बन्धे एका कथा अस्ति | एकदा एक: मनुष्य: कस्यश्चित महात्मनः समीपम् अगच्छत् उपदेशाय च प्रार्थयत् | महात्मन: अवदत् - मम उपदेशे एष: अस्ति यत् अद्यत: अनन्तरं कमपि उपदेशं मा अयाचत | साधो: वार्ताँ श्रुत्वा राममुख: दुविधा जाता | तस्य मनोस्थिति: दृष्ट्वा महात्मा प्रश्नम् अकरोत | वद सत्यवाचनं शोभनम् अथवा अशोभनं | सः अवदत् – नूनं सत्यवाचनमेव | बाढम् चौरकार्यम् उचितम् अथवा अनुचितं | रामसुखः अवदत् निः संदेहः एतत् तु पापकर्म: | महात्मा पुनः अपृच्छत् – समयस्य सदुपयोग: कर्त्तव्य: अथवा न | समय: बहुमूल्य: | अस्य सदुपयोग: पूर्णत: कुर्यात् इति रामसुखः अकथयत् | परेषां सम्मानं कुर्यात् अथवा न | इति महात्मन: अन्तिम् प्रश्न: आसीत् | रामसुखः अकथयत् – "अवश्यमेव करणीयं" यदि वयं अन्येषां सम्मानं करिष्याम: तर्हि ते अपि अस्मभ्यं प्रतिदाने तथैव दास्यन्ति | तदा महात्मा उवाच – त्वं तु सर्वं जानासि किन्तु ज्ञानमात्रेण किञ्चिद् न संभवम् | एता शिक्षा: स्वजीवने अपि पालयत् चिन्तनं मननं च कुरुत, तदेव तव कल्यानं प्राप्स्यसि |

नाम - मनीषा मीना
कक्षा –ग्यारहवीं

## जय सुरभारती !

जय जय हे भगवति सुरभारती ! तव चरणौ प्रणमाम: |
नाद- ब्रह्मपि जय वागीश्वरी ! शरणम्
ते गच्छाम: ||१||
त्वमसि शरण्या त्रिभुवनधन्या ,
सुर-मुनि-वंदित-चरणा |
नवरस- मधुरा कविता -मुखरा,
स्मित-रूचि-रुचिराभरणा ||2||
आसीना भव मानस- हंसे
कुंद- तुहिन- शशि- धवले !
हर जडतां कुरु बोधि- विकासं
सित-पंकज- तनु-विमले ! ||3||
ललित -कलामयि ज्ञान- विभामयि
वीणा- पुस्तक -धारिणी !
मतिरास्तान्नो तव पद-कमले
अयि कुंठा -विष -हारिणि ! ||4||

नाम- साक्षी भार्गव
कक्षा- ग्यारहवीं

## देवालय:

मम गृहस्य नातिदूरे एकः विशालः सुन्दरः देवालयः अस्ति | देवालय: देवानां स्थानं भवति | अत्र प्रतिदिनम् अनेके भक्ता: महिला: बाला: च ईश्वर पूजार्थम् आगच्छन्ति | पुष्पमाला: अक्षत-चन्दन-सिंदूरं च अर्पयन्ति | देवालये राधाकृष्णौ, हनूमान, सीतारामौ, माता दुर्गा चेति प्रतिमा सन्ति | प्रात: सायं प्रसादवितरणम् भवति | अत्र प्रांगणे समये-समये कीर्तनं, सुंदरकाण्डस्य पाठम्, प्रवचनमपि भवति | बहुसंख्यासु जना: अत्रागत्य आनंदं अन्वभवन्ति | अत्र आगत्य सर्वे अपि शांतिम् प्राप्नुवन्ति | अहमपि नित्यमेव देवालयं गत्वा ईश्वरस्य प्रार्थनां करोमि | इति श्लोकं च वदामि -
सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः|
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत||:

नाम -दैवांश जैन
कक्षा-सातवीं

## केरल प्रदेश:

'केरल' इति अतिशोभन: प्रदेश: | एष: भ्रमणयोग्यं स्थलम् | यथा -मुनारम्, तेकडी, एरनाकुलम, आलप्पी च एतानि दर्शनीयस्थलानि सन्ति | केरल प्रदेशे समुद्र: अपि वर्तते | समुद्रतटे सदैव शुद्ध: समीर: प्रवहति | अस्य प्रदेशस्य शिक्षा अति उत्कृष्टा | अतएव भारते – केरलप्रदेश: एव साक्षरप्रदेश :कथ्यते | अत्र कानिचित् नगराणि तु समुद्रतटे स्थितानि सन्ति| समुद्रतटे सूर्योदय: दृश्यम् मनोहर: सुखद: च भवति | मम मित्रस्य जन्मस्थानम् केरलमेव अस्ति| केरलस्य प्राचीनं अभिधानम् नाडम् | एष: देवस्य स्वयं केरलम् कथ्यते| वर्षे एकवारं अहम् सपरिवार: केरलं गच्छामि | मम मित्रजना: तत्रैव निवसन्ति | अत्रत्या: भोजनम् मिष्टान्नं च सर्वेभ्य: जनेभ्य: रोचते | मह्यमपि केरल-प्रदेश :अतीव रोचते|

नाम - गौरव कुमार
कक्षा- दसवीं

## पुस्तकं

पुस्तकम् अस्माकं जीवनस्य अभिन्नम् अंगम् अस्ति | एतत् सर्वेषाम् जनानां मार्गदर्शनं करोति | विविध-विषयाणाम् ज्ञानं कारयति | एतत् अस्मभ्यं मित्रवत् भवति | पुस्तकानि अतीव जीवनोपयोगीं शिक्षां यच्छन्ति | अनेन सहायतया वयं जीवने अग्रसरा: भवाम: | छात्रजीवने तु जीवनाधारं एतत् | छात्रा: अस्य सम्मानं कुर्वन्ति | परीक्षा उत्तीर्णकर्तुम् सर्वे छात्रा: प्रतिदिनं पुस्तकानि पठन्ति सफला: च भवन्ति | अतएव अस्माभि: पुस्तकं रक्षणीयम् | मम प्रियं पुस्तकं 'संस्कृत पुस्तिका' अस्ति | अस्य पुस्तके निहितं ज्ञानं अतीव लाभप्रदम् | एकं श्लोकम् वदामि -

पुस्तकेषु च या विद्या परहस्तगते धनम् |
कार्यकाले समुत्पन्ने न सा विद्या न तद्धनम् ||

नाम - द्वारिका
कक्षा -ग्यारहवीं

# Glimpse of Vidyalaya

# Glimpse of Vidyalaya

# VIDYALAYA AT A GLANCE

# VIDYALAYA AT A GLANCE

# Glimpse of Vidyalaya

# Glimpse of Vidyalaya

प्रधानमंत्री का परीक्षा पर संवाद

## खुद से दूर रखें तनाव को, फिर पास करें जीवन की परीक्षा

मांगरोल. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मंगलवार को स्कूली छात्र छात्राओं को परीक्षा के दिनों में तनाव मुक्त रहने का आहवान किया। सीनियर सैकंडरी विद्यालय में छात्र छात्राओं ने प्रधानमंत्री की लाइव बातचीत को सुना। प्रधानमंत्री ने कहा कि परीक्षा के दिनों छात्र तनाव रहित रह कर अपने जीवन में आगे बढ़ने के लिए दी जाने वाली परीक्षा को तनाव मुक्त होकर दें। बेहतर परिणाम देने के लिए छात्र छात्राएं तनाव मुक्त रहें। तनाव मुक्त रहने से कामयाबी अच्छी तरह से हासिल की जा सकती हैं। इस अवसर पर आयोजित लाइव बातचीत देखने विद्यालय के प्राचार्य सत्यनारायण मीणा ,अभाविप के पूर्व विभाग संयोजक योगेश गौतम, छात्र नेता कुलदीप जाजू समेत बड़ी संख्या में स्कूली छात्र शामिल हुए। कई बार नेट की कनेक्टिविटी में बाधा आने से पूरी बातचीत छात्र छात्राएं नहीं देख पाए। यह कार्यक्रम सभी सरकारी स्कूलों में प्रोजेक्ट के माध्यम से दिखाना था लेकिन कई विद्यालयों के संस्था प्रधानों ने इसमें रुचि ही नहीं ली।

छबड़ा केवी में पीएम का संबोधन सुनते बच्चे

मांगरोल के सीनियर सैकंडरी विद्यालय में प्रधानमंत्री की बातचीत का लाइव प्रसारण देखते विद्यार्थी। -पत्रिका

**छबड़ा.** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम से विद्यालयों एवं कॉलेज के बच्चों, अभिभावकों एवं शिक्षकों के साथ परीक्षा पर चर्चा का कार्यक्रम छात्रों के लिए उत्साह वर्धक रहा। केंद्रीय विद्यालय सीटीपीपी के प्राचार्य मुकेश मीणा के अनुसार प्रधानमंत्री के इस विशेष कार्यक्रम को सुनने के लिए विद्यालय में समुचित व्यवस्था की गई थी। दो एलईडी एवं 2 प्रोजेक्टर लगाकर सभी बच्चों को इस कार्यक्रम का सजीव प्रसारण दिखाया गया। बच्चों,अभिभावकों ने सीख ली कि परीक्षा वास्तव में जीवन की कसौटी और जीवन का आनंद है उससे डरना नहीं बल्कि सामना करना करना चाहिए। इससे बच्चों में उत्साह का संचार हुआ। प्रसारण के बाद प्राचार्य मुकेश मीणा ने सभी बच्चों को कहा की कठोर परिश्रम, दृढ़ इच्छा शक्ति एवं निरंतर अभ्यास से किसी भी परीक्षा में आसानी से सफलता पाई जा सकती है।

## रामनिवास को मिले सर्वाधिक अंक

**छबड़ा.** सीबीएसई के गुरुवार को घोषित हुए 12 वीं कक्षा के परीक्षा परिणाम में मोतीपुरा चौकी थर्मल स्थित केंद्रीय विद्यालय के छात्रों ने भी बाजी मारते हुए क्षेत्र का नाम रोशन किया है। विद्यालय के प्राचार्य मुकेश मीणा के अनुसार विद्यालय का कक्षा 12 वीं का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत एवं गुणवत्तापूर्ण रहा है। विद्यालय के 9 बच्चे विज्ञान संकाय की परीक्षा में बैठे थे, सभी श्रेष्ठ अंकों में उत्तीर्ण रहे। रामनिवास लोधा ने 93.2 के प्रतिशत अंक के साथ विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया। दूसरा स्थान अभिषेक मेहता ने 82.4 अंक के साथ एवं तृतीय स्थान पर भरत ने 81.8 प्रतिशत अंक प्राप्त कर किया है। विद्यालय में आयोजन किया गया। जिसमें विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष प्रमोद अग्रवाल द्वारा विद्यालय को बधाई देते हुए बच्चों का सम्मान किया गया।

## प्रधानमंत्री की परीक्षा पर चर्चा का प्रसारण दिखाय

भास्कर न्यूज | छबड़ा

सीटीपीपी में स्थित केंद्रीय विद्यालय के छात्रों ने मंगलवार को दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में आयोजित प्रधानमंत्री की परीक्षा पर चर्चा को प्रोजेक्टर के माध्यम से सुना।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्कूलों एवं कॉलेज के बच्चों, अभिभावकों एवं शिक्षकों के साथ परीक्षा पर चर्चा कार्यक्रम का मंगलवार सुबह 11 बजे आयोजन किया। जिसमें प्रधानमंत्री ने परीक्षा को जीवन की कसौटी बताते हुए कहा कि परीक्षा जीवन का आनंद है, उससे डरना नहीं, सामना करना है और मंजिल पर पहुंचना है। उन्होंने छात्रों की जिज्ञासाओं तथा प्रश्नों का सटीक एवं सरल तरीके से उत्तर देकर उत्साह का संचार किया। प्रधानमंत्री मोदी के को विद्यालय के विद्यार्थियों को दिखाने के लिए इंतजाम किए गए थे। जहां पर दो एलईडी एवं दो प्रोजेक्टर लगाकर कार्यक्रम का प्रसारण दिखाया गया। प्राचार्य मुकेश कुमार मीणा ने अंत में बच्चों से कहा कि कठोर परिश्रम, दृढ़ इच्छा शक्ति एवं निरंतर अभ्यास से किसी भी परीक्षा में आसानी से सफलता पाई जा सकती है।

छबड़ा. परीक्षा पर चर्चा को देखते के छात्र।

प्रद्युम्न शर्मा

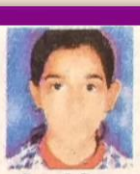

कनिका दिक्षित

द्वारिका मेहता

आयुष नागर

## छबड़ा के केन्द्रीय विद्यालय ने मारी बाजी

**छबड़ा.** सीबीएसई द्वारा घोषित कक्षा 10 वीं के परीक्षा परिणाम में भी केंद्रीय विद्यालय मोतीपुरा थर्मल के परीक्षार्थियों ने बाजी मारी। केवी के प्रिंसपल मुकेश मीणा के अनुसार केवी का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा। इस परीक्षा में विद्यालय के 23 बच्चों ने भाग लिया था जो कि सभी ने सर्वाधिक अंकों से उत्तीर्ण होकर कीर्तिमान स्थापित किया। परीक्षा में शीतल मीना ने 90.4 प्रतिशत अंको के साथ विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया। दूसरा स्थान द्वारिका मेहता ने 8 8 .6 प्रतिशत अंक के साथ प्राप्त किया एवं तृतीय स्थान पर प्रद्युम्न शर्मा का रहा जिसने 8 1.8 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। प्राचार्य मुकेश कुमार मीणा ने परीक्षा परिणाम को विद्यालय की गौरवपूर्ण उपलब्धि बताया। विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष प्रमोद अग्रवाल ने बच्चों का किया उन्हें लक्ष्य बना कर आगे बढने का संदेश दिया।

## केवी में उत्साह उमंग की दौड़ी लहर

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

**छबड़ा.** केंद्रीय विद्यालय सीटीपीपी द्वारा शुक्रवार को वार्षिक खेलकूद दिवस 'उमंग' धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय के बच्चों द्वारा प्रस्तुत किए गए। सांस्कृतिक कार्यक्रमों व खेल प्रतियोगिताओं की प्रस्तुति ने समां बांध दिया। विद्यालय के प्राचार्य मुकेश मीणा के अनुसार समारोह का शुभारंभ मुख्य अतिथि के रूप में प्रमोद कुमार अग्रवाल अध्यक्ष विद्यालय प्रबंधन समिति व मुख्य अभियंता सीटीपीपी ने राष्ट्रीय एवं विद्यालय ध्वज फहरा कर किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में जीके राठी मुख्य अभियंता सुपर क्रिटिकल पावर प्लांट, के.एल मीना सह मुख्य अभियंता, एम.एल मकवाना मुख्य लेखाधिकारी ने भाग लिया। छात्रों द्वारा मार्च पास्ट करते हुए मुख्य अतिथि को सलामी एवं गार्ड ऑफ ऑनर प्रदान किया एवं चंद्रप्रकाश खेल शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को शपथ दिलाई गई। विद्यार्थियों द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया। इस अवसर पर प्राचार्य मीणा ने कहा कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है। इस अवसर पर रस्सीकूद, जलेबी, नीबू-चम्मच, 50,80,100 मीटरदौड़, रिलेदौड़, 4'100 मीटर दौड़ बालक एवं बालिका, अभिभावकों एवं अध्यापकों के मध्य गुब्बारा फोड़ व गेंद फेक प्रतियोगिताएं संपन्न हुई जिन्होंने दर्शकों को रोमांचित कर दिया। बच्चों द्वारा एरोबिक्स डांस, योग प्रदर्शन, पटोला डांस तथा डांस आदि की मनमोहक प्रस्तुतियां पेश कर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। संचालन सुश्री यास्मीन जमील, युवराज शर्मा, सी.पी.मीना ने किया।

छबड़ा के केवी में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते छात्र-छात्राएं। पत्रिका

## छबड़ा केंद्रीय विद्यालय में हुई गो

छबड़ा. कस्बे के समीप स्थित थर्मल पावर प्लांट में गोष्ठी का आयोजन किया गया।

छबड़ा. क्षेत्र के मोतीपुरा प्लांट स्थित केंद्रीय विद्यालय में शनिवार को छात्रों में साहित्य कविता के प्रति रुचि का विकास करने के से काव्य गोष्ठी का आयोजन किया में स्थानीय कवि दयाल परमार, यादव, देवेंद्र कुमार सिसोदिया ने देशप्रेम, मुकतक, बेटी बचाओ, दहेज प्रथा तथा चुनाव जैसी सामाजिक विषय से जुड़ी कविताओं का वाचन किया। काव्य गोष्ठी से पूर्व प्राचार्य मुकेश कुमार मीणा ने कवियों का स्वागत किया। संचालन पुस्तकालय अध्यक्ष यास्मीन ने किया।

## बच्चों ने सजाए मॉडल, हुए पुरस्कृत

मॉडलों का किया निरीक्षण

# Glimpse of Vidyalaya